मेराज की बातें

मौलवी मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

मेराज की बातें

मौलवी मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

पुस्तक का नाम : मेराज की बातें

लेखक : मौलवी मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

अनुवादक : अहमद नदीम नदवी

प्रकाशन : 2009

ISBN 81-7101-452-6

TP-026-09

Published by

IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.

168/2, Jha House, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110 013 (India)
Tel.: 2695 6832-34 Fax: +91-11-2694 2787
Email: **info@idara.com sales@idara.in**
Visit us at: **www.idara.com**
Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

अपनी बात

سبحٰن الذی اسریٰ بعبده لیلا من المسجد الحرام الی المسجد الاقصٰی، ورفعه الدرجات العلیٰ فمن اٰمن به اهتدی ونجا، ومن لم یومن به هلك وفی اودیة الضلال سقط وهَوٰی، فصلّی اللّٰه تعالیٰ علیه وعلیٰ اٰلِه وصحبه و من بهم اقتدیٰ، وعلیٰ من اتبعهم باحسان وبهدیهم اهتدیٰ۔

अम्मा बाद! अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ और उसके करम से यह रिसाला (छोटी किताब) तैयार किया है, जिसमें इसरा और मेराज के वाक़िए दर्ज किए हैं। आम तौर से सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम और हदीस की दूसरी किताबों से रिवायतें जमा की हैं। तफ़्सीर की किताबों में ज़्यादातर तफ़्सीर इब्ने कसीर से रिवायतें ली हैं और कुछ चीज़ें इमाम बैहक़ी की दलाइलुन्नुबूवत और सीरत इब्ने हिशाम से भी ली हैं। अलहम्दु लिल्लाह यह मज्मूआ मुस्तनद भी है और मुफ़स्सल भी। मेराज के सफ़र की बातें और रिवायतें हदीस की किताबों में तलाश और जांच-पड़ताल के बाद लिखी हैं और मेराज के हुक्म और असरार जो हदीस की शरह लिखने वालों की किताबों में मिले, उन्हें भी लिख दिया है।

मेराज शरीफ़ का वाक़िया लगभग 25 सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत किया गया है, जिनमें हज़रत अनस बिन मालिक, हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी, हज़रत मालिक बिन सासआ, हज़रत बुरैदा अस्लमी, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी, हज़रत शद्दाद बिन औस, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हुम भी हैं। मेराज शरीफ़ का अज़ीम वाक़िया, जो रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अज़ीम मोजज़ों में से है, किस सन में पेश आया, इस बारे में सीरत पर लिखने वालों के कई क़ौल हैं। एक क़ौल यह है कि बेसत के दस साल गुज़र जाने के बाद मेराज़ का वाक़िया हुआ। हज़रत इब्ने शहाब ज़ोहरी ने फ़रमाया कि मदीना मुनव्वरा को हिजरत करने से एक साल पहले मेराज हुई और एक क़ौल यह भी है कि हिजरत से सोलह साल पहले मेराज का वाक़िया पेश आया। ये सभी क़ौल हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अल-बिदाया वन्निहाया, पृ० 108, भाग 3 में लिखे हैं। शारेह बुख़ारी अल्लामा किरमानी ने और शारेह मुस्लिम अल्लामा नववी ने एक क़ौल यह भी लिखा है कि बेसत के पांचवें साल मेराज हुई। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

पहले सूरः इसरा की सबसे पहली आयत का तर्जुमा और तफ़्सीर पढ़ें, इसके बाद हदीसों का मज़्मून शुरू होगा। इस रिसाले का नाम 'अन्वारुस्सिराज फ़ी ज़िक्रिल असरा अल-मेराज़ तज्वीज़ करता हूं। जो लोग भी इसे पढ़ें, अहक़र के लिए, अहक़र के वालिदैन और मशाइख़

के लिए और उन तालिब इल्मों के लिए दुआ करें जो इस रिसाले की तैयारी और मस्विदा तैयार करने में मेरे मददगार बने।

वल्लाहुल मूफ़िक़वल मुईन
अल-अब्दुल फ़क़ीर अला रहमते रब्बिही
मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी
अफ़ल्लाहु अन्हु व आफ़ाहु व ज-अ-ल आख़िरतहू ख़ैरम मिन औलाद

—अल-मदीनतुल मुनव्वरा, पहली रजब 1415 हि०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मेराज की बातें

नहमदहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम०

क़ुरआन मजीद में इज्माली तौर पर मेराज शरीफ़ का वाक़िया बयान फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया है—

سُبْحٰنَ الَّذِیْ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَی الَّذِیْ بٰرَکْنَا حَوْلَہٗ لِنُرِیَہٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ط اِنَّہٗ ھُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ

तर्जुमा—'पाक है वह ज़ात जिसने अपने बन्दे को एक रात में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक सफ़र कराया, जिसके चारों ओर हमने बरकतें रखी हैं, ताकि हम उसे अपनी आयतें दिखाएं। बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला है, जानने वाला है।'

यह सूरः इसरा की पहली आयत है। इसमें यह बात साफ़ है कि अल्लाह तआला ने एक रात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मस्जिदे हराम से लेकर मस्जिदे अक़्सा तक सैर करायी और सूरः 'वन्नज्म' की आयत—!

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَھٰی، عِنْدَھَا جَنَّةُ الْمَاْوٰی، اِذْ یَغْشَی السِّدْرَةَ مَا یَغْشٰی، مَازَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی، لَقَدْ رَاٰی مِنْ اٰیٰتِ رَبِّہِ الْکُبْرٰی۔

में यह बात भी साफ़ है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊपरी दुनिया में अल्लाह तआला की बड़ी-बड़ी आयतें (निशानियां) देखीं।

मस्जिदे हराम[1] उस मस्जिद का नाम है जो काबा शरीफ़ के चारों तरफ़

1. लफ़्ज़ 'हराम' मोहतरम के मानी में है।

है और कभी-कभी हरमे मक्का भी इससे मुराद हुआ है (जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया) –

اِلَّا الَّذِيْنَ عَاهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ،

आयत को लफ़्ज़ 'सुब्हानल्लज़ी' से जो शुरू फ़रमाया है, उसमें उन कम समझों के ख़्याल व गुमान की तर्दीद (खंडन) है, जो इस वाक़िया को महाल (नामुम्किन) और मुम्तना (जो न हो सके) समझते थे और अब भी कुछ जाहिल ऐसा ख़्याल करते हैं। ये लोग अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत में शक करते हैं। उनको रद्द करते हुए फ़रमा दिया कि अल्लाह को सब कुछ क़ुदरत हासिल है। वह किसी भी चीज़ से आजिज़ नहीं है। वह जो चाहता है, कर सकता है, वह हर कमी और ऐब से पाक है। उसकी क़ुदरत कामिल है, कोई चीज़ उसके लिए भारी नहीं और 'असरा बिअब्दिही' जो फ़रमाया और उसके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बन्दे होने की शान को बयान फ़रमाया। बन्दा होना बहुत बड़ा मक़ाम है। अल्लाह का बन्दा होना बहुत बड़ी बात है। जिसे अल्लाह ने अपना बन्दा बना लिया और यह एलान फ़रमा दिया कि वह हमारा बन्दा है, उससे बड़ा कोई शरफ़ नहीं, इसीलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि–

احب الاسماء الى الله عبدالله وعبدالرحمن۔

'अल्लाह के लिए सबसे प्यारे नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान हैं।'

—मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 409

एक बार एक फ़रिश्ता ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उसने अर्ज़ किया

कि आपके रब ने सलाम फ़रमाया है और फ़रमाया है कि अगर तुम चाहो तो बन्दा बनने वाले नबी बन जाओ और अगर चाहो तो बादशहत वाले नबी बन जाओ। आपने मश्विरा लेने के लिए जिब्रील की तरफ़ देखा। उन्होंने तवाज़ो अपनाने का मश्विरा दिया। आपने जवाब दे दिया कि बन्दा बनने वाला नबी बनकर रहना चाहता हूं। हज़रत आइशा रज़ि० जो इस हदीस की रिवायत करने वाली हैं, उन्होंने बयान किया कि इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तकिया लगा कर खाना नहीं खाते थे। आप फ़रमाते थे कि मैं ऐसे खाता हूं जैसे बन्दा खाता है और ऐसे बैठता हूं जैसे बन्दा बैठता है। —मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 521, अज़ शरहुस्सुन्न :

इसरा के वाक़िए को बयान करते हुए लफ़्ज़ 'अब्दुहू' लाने में एक हिक्मत यह भी है कि वाक़िए की तफ़्सील सुनकर किसी को यह वहम न हो जाए कि आपकी हैसियत बन्दा होने से आगे बढ़ गई और आपकी शान में कोई ऐसा एतक़ाद न कर ले कि बन्दा होने की हैसियत को आगे बढ़ा कर अल्लाह की शाने उलूहियत में शरीक क़रार दे दे और जैसे नसारा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम में गुलू करके गुमराह हुए, इस तरह की कोई गुमराही उम्मते मुहम्मदिया अला साहिबिस्सलातु वस्सलामु में न आ जाए। क़ुरआन मजीद में यह बात साफ़ लिखी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक रात मस्जिदे हराम से लेकर मस्जिदे अक़्सा तक सैर कराई। मस्जिदे हराम उस मस्जिद का नाम है जो काबा शरीफ़ के चारों तरफ़ है और कभी-कभी हरमे मक्का पर भी इसका इतलाक़ हुआ है, जैसा कि अल्लाह तआला का क़ौल है—

اِلاَّ الَّذِيْنَ عَاهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

और मस्जिदे अक़्सा बैतुल मक़्दिस का नाम है जो शाम में है। लफ़्ज़ अक़्सा ज़्यादा दूर वाली चीज़ के लिए इस्तेमाल होता है। मस्जिदे अक़्सा को अक़्सा क्यों कहा जाता है, इसके बारे में कई क़ौल हैं। रूहुल मआनी के लिखने वाले लिखते हैं, चूंकि वह हिजाज़ में रहने वालों से दूर है, इसलिए उसकी सिफ़त (विशेषण) अक़्सा लाई गई और एक क़ौल यह है कि जिन मस्जिदों की ज़ियारत की जाती है, उनमें वह सबसे ज़्यादा दूर है। कोई आदमी मस्जिदे हराम से रवाना हो तो पहले मदीना मुनव्वरा से गुज़रेगा, फिर बहुत दिनों के बाद मस्जिदे अक़्सा पहुंचेगा। जब ऊंटों पर सफ़र होते थे तो मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक चालीस दिन का सफ़र था और एक क़ौल यह है कि मस्जिदे अक़्सा इसलिए कहा गया कि वह गन्दी और ख़बीस चीज़ों से पाक है। —रूहुल मआनी, पृ० 9, भाग 15

मस्जिदे अक़्सा के बारे में 'अल्लज़ी बारकना हौलहू' फ़रमाया यानी जिसके चारों तरफ़ हमने बरकत दी है, यह बरकत दीनी एतबार से भी और दुन्यवी एतबार से भी। दीनी एतबार तो यों है कि बैतुल मक़्दिस हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु की इबादतगाह है और उन लोगों का क़िब्ला रहा है और वह उन तीन मस्जिदों में से है, जिनकी तरफ़ सफ़र करने की इजाज़त दी गई है और इसके चारों तरफ़ हज़रात अंबिया किराम दफ़न किए हुए हैं और दुन्यवी एतबार से इसलिए बरकत वाला है कि वहां पर नहरें और पेड़ बहुत हैं।

'लिनुरियहू मिन आयातिना' (ताकि हम अपने बन्दे को अपनी

आयतें यानी कुदरत के अजाइब दिखाएं) एक रात में इतना लम्बा सफ़र हो जाना और हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु से मुलाक़ातें हो जाना, उनकी इमामत करना और रास्ते में बहुत-सी चीज़ें देखना, यह सब कुदरत के अजाइब में से था।

'इन्नहू हुवस्समीउल बसीर' (बिला शुबहा अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है।) साहिबे मआलिमुत्तंज़ील लिखते हैं कि 'अस्समीअ' फ़रमा कर यह बताया कि अल्लाह दुआओं का सुनने वाला है और 'अल-बसीर' फ़रमा कर यह ज़ाहिर कर दिया कि वह सब कुछ देखने वाला है और रात के अंधेरों में हिफ़ाज़त करने वाला है।

सूरः इसरा में मस्जिदे अक़्सा तक सफ़र करने का ज़िक्र है और हदीसों में आसमानों पर जाने बल्कि सिदरतुल मुन्तहा, बल्कि उससे भी ऊपर तक तशरीफ़ ले जाने का ज़िक्र है। अह्ले सुन्नत वल जमाअत का यही मज़हब है कि अल्लाह तआला ने आपको एक ही रात में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक और फिर वहां से सातवें आसमान से ऊपर तक सैर कराई, फिर उसी रात में वापस मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचा दिया और यह आना-जाना सब जागने की हालत में था और जिस्म व रूह दोनों के साथ था।

हदीस शरीफ़ की किताबों में मेराज के वाक़िए को इसरा भी कहा जाता है। कुरआन मजीद में 'सुब-हानल्लज़ी असरा बिअब्दिही' फ़रमाया है और हदीसों में आसमानों पर तशरीफ़ ले जाने के बारे में 'सुम-म उरि-ज बी' फ़रमाया है, इसलिए इस पाक वाक़िए को इसरा और मेराज दो नामों से याद किया जाता है, तफ़्सील से ज़िक्र आ रहा है। हम पहले सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की रिवायतें नक़ल

करते हैं। सहीह मुस्लिम की रिवायतें ली हैं, क्योंकि इसमें मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक पहुंचने और फिर ऊपरी दुनिया में तशरीफ़ ले जाने का ज़िक्र है। सहीह बुख़ारी की किसी रिवायत में हमें मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक पहुंचने का ज़िक्र नहीं मिला। इसलिए बुख़ारी की रिवायत को बाद में ज़िक्र लिया है।

बुर्राक़ पर सवार होकर बैतुल मक़्दिस का सफ़र करना और वहां हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु की इमामत करना

सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरे पास एक बर्राक़ लाया गया जो लम्बा, सफ़ेद रंग का चौपाया था, उसका क़द गधे से बड़ा और ख़च्चर से छोटा था, वह अपना क़दम वहां तक रखता था, जहां तक उसकी नज़र पड़ती थी। मैं उस पर सवार हुआ, यहां तक कि मैं बैतुलमक़्दिस तक पहुंच गया। मैंने उस बर्राक़ को उस हलक़े से बांध दिया, जिससे हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम बांधा करते थे, फिर मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ और उसमें दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर मस्जिद से बाहर आया, तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास एक बरतन में शराब और एक बरतन में दूध लेकर आए। मैंने दूध को ले लिया, इस पर जिब्रील ने कहा कि आपने फ़ितरत को अख़्तियार किया, फिर हमें आसमान की तरफ़ ले जाया गया और पहले आसमान में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और दूसरे आसमान में हज़रत ईसा और हज़रत यह्या

अलैहिस्सलाम और तीसरे आसमान में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और चौथे आसमान में हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम और पांचवें आसमान में हज़रत उज़ैर और छठे आसमान में हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम से मुलाक़ात हुई और सबने मरहबा कहा और सातवें आसमान में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। उनके बारे में आपने बताया कि वह बैतुलमामूर से टेक लगाए हुए तशरीफ़ फ़रमा थे और यह भी बताया कि बैतुलमामूर में रोज़ाना सत्तर फ़रिश्ते दाख़िल होते हैं जो दोबारा उसमें लौट कर नहीं आते।

फिर मुझे सिदरतुल मुन्तहा तक ले जाया गया। अचानक देखता हूं कि पत्ते बड़े-बड़े हैं जैसे हाथी के कान हों और उसके फल इतने बड़े-बड़े हैं जैसे मटके हों। जब सिदरतुल मुन्तहा को अल्लाह के हुक्म से ढांकने वाली चीज़ों ने ढांक लिया तो उसका हाल बदल गया। अल्लाह की किसी भी मख़्लूक़ में इतनी ताक़त नहीं कि उसके हुस्न को बयान कर सके।[1] उस वक़्त मुझ पर अल्लाह तआला ने उन चीज़ों की वह्य फ़रमाई जिसकी वह्य उस वक़्त फ़रमाना था और मुझ पर रात-दिन में रोज़ाना पचास नमाज़ें पढ़ना फ़र्ज़ किया गया। मैं वापस उतरा और मूसा अलैहिस्सलाम पर गुज़र हुआ तो उन्होंने मालूम किया कि आपके रब ने आपकी उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया? मैंने कहा, पचास नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं। उन्होंने कहा कि वापस जाइए, और अपने रब से कमी का सवाल कीजिए, क्योंकि आपकी उम्मत इसकी ताक़त नहीं रख सकती, मैं बनी इसराईल को आज़मा चुका हूं।

---

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० की रिवायत में है कि सिदरतुल मुन्तहा को सोने के परवानों ने ढांक रखा था।

आपने फ़रमाया कि मैं अपने रब की तरफ़ वापस लौटा और अर्ज़ किया कि ऐ रब! मेरी उम्मत पर कमी फ़रमा दीजिए। चुनांचे पांच नमाज़ें कम फ़रमा दीं। मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास वापस आया और मैंने बताया कि पांच नमाज़ें कम कर दी गई हैं। उन्होंने कहा, आपकी उम्मत इसकी ताक़त नहीं रख सकती। आप अपने रब से रुजू कीजिए और कमी का सवाल कीजिए। आपने फ़रमाया कि मैं बार-बार वापस होता, (कभी मूसा अलैहिस्सलाम के पास आता, कभी अल्लाह के दरबार में हाज़िरी देता) यहां तक कि पांच नमाज़ें रह गईं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ मुहम्मद! यह रोज़ाना दिन-रात में पांच नमाज़ें हैं। हर नमाज़ के बदले दस नमाज़ों का सवाब मिलेगा, इसलिए यह (सवाब में) पचास ही हैं। जो आदमी किसी नेकी का इरादा करेगा, फिर उसे न करेगा, तो उसके लिए (सिर्फ़ इरादे की वजह से) एक नेकी लिख दी जाएगी और जिस आदमी ने इरादा करने के बाद अमल भी कर लिया तो उसके लिए दस नेकियां लिख दी जाएंगी और जिस आदमी ने किसी बुराई का इरादा किया और उस पर अमल न किया, तो कुछ भी न लिखा जाएगा और अगर अपने इरादे के मुताबिक़ अमल कर लिया तो एक ही गुनाह लिखा जाएगा। आपने फ़रमाया कि मैं नीचे वापस आया और मूसा अलैहिस्सलाम तक पहुंचा और उन्हें पूरी बात बता दी तो उन्होंने कहा कि वापस जाओ और अपने रब से कमी का सवाल करो। मैंने कहा कि मैं अपने रब की बारगाह में बार-बार रुजू करता रहा, यहां तक कि अब मुझे शर्म आ गई।[1]

1. मुस्लिम, भाग 1, पृ० 91

सही मुस्लिम, भाग 1, पृ० 26 में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के मुताबिक़ यह भी है कि मैंने अपने आपको हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु की जमाअत में देखा, इसी बीच नमाज़ का वक़्त हो गया, तो मैंने उनकी इमामत की। जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो किसी कहने वाले ने कहा कि ऐ मुहम्मद! यह जहन्नम का दारोग़ा है, इसको सलाम कीजिए। मैं उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुआ तो उसने ख़ुद सलाम कर लिया। (यह बैतुलमक़्दिस में इमामत फ़रमाना) आसमानों पर तशरीफ़ ले जाने से पहले वाक़े हुआ।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अपनी तफ़्सीर भाग 3, पृ० 6 में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० की रिवायत जो इब्ने अबी हातिम के हवाले से नक़ल की है, उसमें यों है, (अभी बैतुल मक़्दिस ही में थे) कि बहुत से लोग जमा हुए, फिर एक अज़ान देने वाले ने अज़ान दी। इसके बाद हम सफ़ें बनाकर खड़े हो गए, इन्तिज़ार में थे कि कौन इमाम बनेगा। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मेरा हाथ पकड़ कर आगे बढ़ा दिया और मैंने हाज़िर लोगों को नमाज़ पढ़ा दी। जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो जिब्रील अलैहि० ने कहा कि ऐ मुहम्मद! आप जानते हैं कि आपके पीछे किन लोगों ने नमाज़ पढ़ी है। मैंने कहा, नहीं। जिन अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु से पहले मुलाक़ात हो चुकी थी, उनके अलावा भी बहुत से लोगों ने आपकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी थी और सबसे तआरुफ़ भी नहीं हुआ, इसलिए यों फ़रमा दिया कि मैं इन सबको नहीं जानता। हज़रत जिब्रील अलैहि० ने कहा कि जितने भी नबी अल्लाह तआला ने भेजे हैं, उन सबने आपके पीछे

नमाज़ पढ़ी है।[1] (इसके बाद आसमानों पर जाने का तज़्किरा है।)

सहीह बुख़ारी में मेराज के वाक़िए की तफ़्सील

सहीह बुख़ारी में मेराज का वाक़िया हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० की रिवायत के मुताबिक़ कई जगह रिवायत किया गया है कि कहीं हज़रत अनस रज़ि० ने हज़रत अबूज़र रज़ि० के वास्ते से और कहीं हज़रत मालिक बिन सासआ अंसारी रज़ि० के वास्ते से बयान किया है।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मालिक बिन सासआ रज़ियल्लाहु अन्हु के वास्ते से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं काबा के क़रीब इस हालत में था कि जैसे मैं कुछ जाग रहा हूं, कुछ सो रहा हूं। मेरे पास तीन आदमी आए, मेरे पास सोने का तश्त लाया गया, जो हिक्मत और ईमान से भरा हुआ था। मेरा सीना चाक किया गया, फिर उसे ज़मज़म के पानी से धोया गया। फिर उसे हिक्मत और ईमान से भर दिया गया, इसके बाद उसको दुरुस्त कर दिया गया और मेरे पास एक सफ़ेद चौपाया लाया गया, वह क़द में ख़च्चर से कम था और गधे से ऊंचा था। यह चौपाया बुर्राक़ था।

आसमानों पर तशरीफ़ ले जाना और आपके लिए दरवाज़ा खोला जाना, हज़रात अंबिया किराम से मुलाक़ात फ़रमाना और उनका मरहबा कहना

मैं जिब्रील अलैहिस्सलाम के साथ रवाना हुआ, यहां तक कि क़रीब वाले आसमान तक पहुंच गया। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम

1. मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 1, पृ० 74
2. देखो, पृ० 50 और पृ० 455 और पृ० 471 और पृ० 548, भाग 1,

ने आसमान के ख़ाज़िन से कहा कि खोलिए। उसने सवाल किया कि आपके साथ कौन है? जिब्रील ने जवाब दिया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। उसने मालूम किया, क्या उन्हें बुलाया गया है? जिब्रील ने जवाब दिया, हां, उन्हें बुलाया गया है। इस पर उसने मरहबा कहा और दरवाज़ा खोल दिया गया और कहा गया, उनका आना बहुत अच्छा आना है।

हम ऊपर पहुंचे तो वहां हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पाया। मैंने उन्हें सलाम किया, उन्होंने फ़रमाया, 'मरहबम मिनइब्निवं-व नबीयिन' (बेटे और नबी के लिए मरहबा है।) फिर हम दूसरे आसमान तक पहुंचे, वहां भी जिब्रील से इसी तरह सवाल व जवाब हुआ जो पहले आसमान में दाख़िल होने से पहले किया गया था। जब दरवाज़ा खोल दिया गया, ऊपर पहुंचे तो वहां ईसा और यह्या अलैहिमस्सलाम को पाया। उन्होंने भी मरहबा कहा। उनके लफ़्ज़ यों थे, 'मरहबम बि-क मिन अख़िन व नबीयिन' (मरहबा हो भाई के लिए और नबी के लिए) फिर हम तीसरे आसमान पर पहुंचे, वहां जिब्रील से वही सवाल व जवाब हुआ जो पहले आसमानों में दाख़िल होने से पहले हुआ था। फिर दरवाज़ा खोल दिया गया तो हम ऊपर पहुंच गए। वहां हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को पाया। मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने 'मरहबम बि-क मिन अख़िन व नबीयिन' कहा।

फिर हम चौथे आसमान तक पहुंचे वहां भी जिब्रील अलैहिस्सलाम से पहले की तरह सवाल-जवाब हुआ। दरवाज़ा खोल दिया गया तो हम ऊपर पहुंच गए। वहां इदरीस अलैहिस्सलाम को पाया।

मैंने उनको सलाम किया। उन्होंने भी वही कहा, 'मरहबम बि-क मिन अख़िन व नबीयिन'। फिर हम पांचवें आसमान पर पहुंचे तो वहां भी जिब्रील अलैहिस्सलाम से पहले की तरह सवाल व जवाब हुआ। दरवाज़ा खोल दिया गया तो हम ऊपर पहुंचे। वहां हारून अलैहिस्सलाम को पाया। मैंने उनको सलाम किया। उन्होंने भी 'मरहबम बि-क मिन अख़िन व नबीयिन' कहा। फिर हम छठे आसमान पर पहुंचे, वहां भी पहले की तरह हज़रत जिब्रिल अलैहिस्सलाम से वही सवाल व जवाब हुए। जब दरवाज़ा खोल दिया गया तो हम ऊपर पहुंच गए। वहां हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पाया। मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने भी मरहबम बि-क मिन अख़िन व नबीयिन' कहा। जब मैं आगे बढ़ गया, तो वह रोने लगे। उनसे सवाल किया गया कि आपके रोने की वजह क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि एक लड़का मेरे बाद नबी बनाकर भेजा गया, उसकी उम्मत के लोग जन्नत में दाख़िल होंगे जो मेरी उम्मत के दाख़िल होने वालों से अफ़ज़ल होंगे।

दूसरी रिवायत में है कि उसकी उम्मत के लोग जन्नत में दाख़िल होने वाली मेरी उम्मत से कहीं ज़्यादा होंगे। फिर हम सातवें आसमान पर पहुंचे, वहां भी जिब्रील से पहले की तरह सवाल व जवाब हुआ। जब दरवाज़ा खुल गया तो हम ऊपर पहुंचे। वहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को पाया। मैंने उन्हें सलाम किया, उन्होंने फ़रमाया, मरहबम बि-क मिन इब्निन व नबीयिन। (हज़रत आदम और हज़रत इब्राहीम ने 'मरहबम बि-क मिन इब्निन व नबीयिन' फ़रमाया, क्योंकि आप उनकी नस्ल में थे। बाक़ी लोगों ने 'मरहबम बि-क मिन

आख़िनव नबीयिन' फ़रमाया।[1]

अल-बैतुल मामूर और सिदरतुल मुन्तहा का देखना

इसके बाद अल-बैतुल मामूर मेरे सामने कर दिया गया। मैंने जिब्रील अलैहि० से सवाल किया, यह क्या है? उन्होंने जवाब दिया, यह अल-बैतुल मामूर है। इसमें हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं, जब निकल कर चले जाते हैं, तो कभी भी वापस नहीं होते, फिर मेरे सामने सिरातुल मुन्तहा लाया गया। क्या देखता हूं कि उसके बेर हिज्र[2] के मटकों के बराबर हैं और उसके पत्ते हाथी के कानों के बराबर हैं।

सिदरतुल मुन्तहा की जड़ में चार नहरें नज़र आईं—दो बातिनी नहरें और दो ज़ाहिरी नहरें। मैंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से मालूम किया। उन्होंने जवाब दिया कि बातिनी दो नहरें जन्नत की नहरें हैं और ज़ाहिरी दो नहरें फ़रात और नील हैं।[3] (फ़रात इराक़ में और नील मिस्र में है)

---

1. तारीख़ के माहिरों ने लिखा है कि हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के दादा थे और हज़रत नूह के बाद हज़रत आदम की जितनी भी नस्ल चली है, वह हज़रत नूह से है, इसलिए आंहज़रत सल्ल० भी हज़रत इदरीस की औलाद हुए, इसलिए उन्हें भी मरहबम बि-क मिनब्निन व नबीयिन कहना चाहिए था। अगर तारीख़ वालों की यह बात सही हो, तो इसका जवाब यह है कि उन्होंने उख़ुवत (भाईचारा) का ज़िक्र मुनासिब जाना, क्योंकि हज़रात अंबिया नुबूवत के एतबार से भाई-भाई हैं और मुहब्बत की वजह से भी और अदब की वजह से भी इब्न कहना मुनासिब न जाना। —बुख़ारी, पृ० 455
2. हिज्र एक जगह थी, जहां बड़े-बड़े मटके बनाए जाते थे।
3. ये दो नहरें हैं जो अन्दर को जा रही हैं। यह कौसर और नहरे रहमत मालूम

पचास नमाज़ों का फ़र्ज़ होना और हज़रत मूसा अलैहि० के तवज्जोह दिलाने पर बार-बार दरख़्वास्त करने पर पांच नमाज़ें रह जाना

इसके बाद मुझ पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं। मैं वापस आया तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास पहुंच गया। उन्होंने मालूम किया कि अपनी उम्मत के लिए आपने क्या किया। मैंने कहा, मुझ पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गई हैं। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा, मैं लोगों को आपसे ज़्यादा जानता हूं। बनी इसराईल के साथ मैंने बड़ी मेहनत की है। (वे लोग फ़र्ज़ नमाज़ों का एहतमाम न कर सके) बेशक आपकी उम्मत को इतनी नमाज़े पढ़ने की ताक़त न होगी। जाइए, अपने रब से कम करने का सवाल कीजिए। मैं वापस लौटा और अल्लाह जल्ल शानुहू से कम करने का सवाल किया तो अल्लाह ने चालीस नमाज़ें बाक़ी रखीं। मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर वही बात कही। मैंने फिर अल्लाह से कम करने का सवाल किया, तो तीस नमाज़ें बाक़ी रह गईं। मूसा ने फिर तवज्जोह दिलाई तो कम करने का सवाल करने पर अल्लाह की तरफ़ से बीस नमाज़ें कर दी गईं।

होती है कि वे दोनों 'सलसबील' की शाखें हैं। मुम्किन है यह सलसबील और इसका वह मौक़ा जहां से नहरे कौसर और नहरे रहमत उससे निकली हैं, ये सब सिदरा की दूसरी जड़ में हों और नील व फ़रात का आसमान पर होना इस तरह मुम्किन है कि दुनिया में जो नील व फ़रात हैं, ज़ाहिर है बारिश का पानी जज़्ब होकर (सूख कर) पत्थर से जारी होता है और बारिश आसमान से है, सो जो हिस्सा बारिश का नील व फ़रात का माद्दा है, मुम्किन है कि वह हिस्सा आसमान से आता हो, पस इस तौर पर नील व फ़रात की असल आसमान पर हुई। —नश्रुत्तीब, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 12

फिर मूसा अलैहि० ने उसी तरह की बात कही, तो दरख़्वास्त करने पर अल्लाह की तरफ़ से दस नमाज़ें कर दी गईं। मैं मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया तो उन्होंने फिर वही बात कही। मेरे दरख़्वास्त करने पर अल्लाह ने पांच नमाज़ें बाक़ी रहने दीं। मैंने तस्लीम किया (अब दरख़्वास्त नहीं करता) इस पर अल्लाह की तरफ़ से यह निदा दी गई कि मैंने अपने फ़र्ज़ का हुक्म बाक़ी रखा और अपने बन्दों से कमी कर दी और मैं एक नेकी का बदला दस बनाकर देता हूं (इसलिए अदा करने में पांच रहीं और सवाब में पचास ही रहीं।)

यह रिवायत सहीह बुख़ारी में पृ० 455 पर है और सहीह बुख़ारी पृ० 471 पर, हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के वास्ते से मेराज का जो वाक़िया नक़ल किया है, उसमें हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मरहबा कहने के तज़्करे के बाद यों है कि आपने फ़रमाया कि फिर मुझे जिब्रील और ऊपर लेकर चढ़े, यहां तक कि मैं ऐसी जगह पर पहुंच गया जहां क़लमों के लिखने की आवाज़ें आ रही थीं।[1] इसके बाद पचास नमाज़ें फ़र्ज़ होने और उसके बाद मूसा अलैहिस्सलाम के तवज्जोह दिलाने और अल्लाह के दरबार में बार-बार सवाल करने पर पांच नमाज़ें बाक़ी रह जाने का ज़िक्र है और उसके आख़िर में यह है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया—

'ला युबद्दलु क़ौलु ल दय-य' यानी मेरे पास बात बदली नहीं जाती (पचास नमाज़ें फ़र्ज़ कर दीं तो पचास ही का सवाब मिलेगा)

1. फ़रिश्ते, जो अल्लाह की ओर से लागू फ़रमाए हुए फ़ैसले लिखते हैं, या जो कुछ लौहे महफ़ूज़ से नक़ल कर रहे थे, ये उनके लिखने की आवाज़ें थीं। —शरहे मुस्लिम (नववी), भाग 1, पृ० 92

और सिदरतुल मुन्तहा के बारे में फ़रमाया कि उन्हें ऐसे रंगों ने ढांप रखा था, जिन्हें मैं नहीं जानता, फिर मैं जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। वहां देखता हूं कि मोतियों के गुम्बद हैं और उसकी मिट्टी सूखी है। पृ० 584 पर भी हज़रत इमाम बुख़ारी रह० ने मेराज की हदीस ज़िक्र की है, वहां भी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मालिक बिन सासआ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि उसमें 'अल-बैतुल मामूर' के ज़िक्र के बाद यों है कि फिर मेरे पास एक बरतन में शराब और एक बरतन में दूध और एक बरतन में शहद लाया गया। मैंने शहद ले लिया जिसपर जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा, यही वह दीने फ़ितरत है यानी दीने इस्लाम है जिस पर आप हैं और आपकी उम्मत है। इस रिवायत में यह भी है कि जब पांच नमाज़ें रह गईं तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने और कम करने के लिए कहा, तो आपने फ़रमाया—

سَأَلْتُ رَبِّىْ حَتّٰى اِسْتَحْيَيْتُ وَلٰكِنِّىْ اَرْضٰى وَاُسَلِّمُ

'मैंने अपने रब से यहां तक सवाल किया कि शरमा गया। अब तो मैं राज़ी होता हूं और तस्लीम करता हूं।'

—बुख़ारी की रिवायत ख़त्म

नमाज़ों के अलावा दूसरे दो इनाम

मेराज की रात में नमाज़ों का जो इनाम मिला और पांच नमाज़ें पढ़ने पर भी पचास नमाज़ों का सवाब देने का अल्लाह ने जो वायदा फ़रमाया, उसके साथ यह भी इनाम फ़रमाया कि सूरः बक़रा की आख़िरी आयतें (आ-म-नर्रसूलु से लेकर आख़िर तक) इनायत फ़रमाईं

और साथ ही अल्लाह तआला ने यह वायदा भी फ़रमाया कि जो आदमी शिर्क न करता हो (और वह मुसलमान हो) उसके बड़े-बड़े गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे[1], और साथ ही इस क़ानून का भी एलान फ़रमा दिया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मतियों के बड़े-बड़े गुनाह बख़्श दिए जाएंगे जो शिर्क न करते हों। मतलब यह है कि कबीरा गुनाहों की वजह से हमेशा अज़ाब में न रहेंगे, बल्कि तौबा से माफ़ हो जाएंगे या सज़ा भुगत कर छुटकारा हो जाएगा। (नववी के मुताबिक़) काफ़िर और मुश्रिक हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे।

मेराज में दीदारे इलाही (अल्लाह का दीदार)

इसमें इख़्तिलाफ़ है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेराज की रात में अल्लाह के दीदार से मुशर्रफ़ हुए या नहीं। अगर दीदार हुआ तो वह खुली आंखों से था या दिल की आंखों से था, यानी सर की आंखों से देखा या दिल की आंखों से दीदार किया। जमहूर सहाबा और ताबिईन का यही मज़हब है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने परवरदिगार को सिर की आंखों से देखा और तह्क़ीक़ करने वालों के नज़दीक यही क़ौल राजेह और हक़ है।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा देखने का इंकार करती थीं और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु देखने को साबित करते थे और मानते थे। जम्हूर उलेमा ने इसी क़ौल को तर्जीह दी

1. मुस्लिम, भाग 1, पृ० 97

है। अल्लामा नववी शरहे मुस्लिम में लिखते हैं–

والاصل فی الباب حدیث ابن عباس حبر الامة والمرجوع الیه فی المعضلات وقد راجعه ابن عمر فی هذه المسئلة هل رای محمد ﷺ ربه فاخبره انه راه ولایقدح فی هذا حدیث عائشه فان عائشة لم تخبرانها سمعت النبی ﷺ یقول لم ار ربی انما ذکرت ماذکرت متاولة لقول اللّٰه تعالیٰ وماکان لبشران یکلمه اللّٰه الا وحیا اومن وراء حجاب اویرسل رسولا ولقول اللّٰه تعالیٰ لاتدرکه الابصار والصحابی اذا قال قولا وخالفه وغیره منهم لم یکن قوله حجة واذا صحت الروایات عن ابن عباس فی اثبات الرویه وجب المصیر الیٰ اثباتها فانها لیست مما یدرك بالعقل ویوخذ بالظن وانما یتلقی بالسماع ولا یستجیز احدان یظن بابن عباس انه تکلم فی هذہ المسئلة بالظن والاجتهاد قلت لم اجد التصریح من ابن عباس انه رای ربه تعالیٰ بعینی رأسه ورویٰ مسلم عنه انه راٰه بقلبه وفی روایة رواه بفواده مرتین والعلم عند اللّٰه۔

सूरः नज्म में जो 'सुम-म दना फ़-त-दल्ला' और 'ल-क़द रआहु नज़लतन उख़रा अिन-द सिदरतिल मुन्तहा' आया है, उसके बारे में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं कि उन्हें जिब्रील अलैहिस्सलाम का देखना मुराद है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जिब्रील इंसानी शक्ल में आया करते थे। सिदरतुल मुन्तहा के क़रीब आपने उनको असली शक्ल में और इस हालत में देखा कि उनके छः सौ पर थे। उन्होंने उफ़क़ को भर दिया था।

हज़रत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु भी यही फ़रमाते थे कि

فكان قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى

और

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى

से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम का क़रीब होना और देखना मुराद है।

क़ुरैश का झुठलाना और उन पर हुज्जत क़ायम होना

बैतुल मक़्दिस तक पहुंचना, फिर वहां से आसमानों तक तशरीफ़ ले जाना और मक्का मुअज़्ज़मा तक वापस आ जाना एक ही रात में हुआ। वापस होते हुए रास्ते में एक तिजारती क़ाफ़िले से मुलाक़ात हुई जो क़ुरैश का क़ाफ़िला था। वह शाम (सीरिया) से वापस आ रहा था। सुबह को जब आपने मेराज का वाक़िया बयान किया तो क़ुरैश ताज्जुब करने लगे और झुठलाने लगे और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के पास पहुंचे, उनसे कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बयान कर रहे हैं कि रात को उन्होंने इस तरह सफ़र किया, फिर सुबह होने से पहले वापस आ गए। हज़रत अबूबक्र ने पहले तो यों कहा कि तुम लोग झूठ बोलते हो, (उन्होंने ऐसा नहीं कहा) क़सम खाकर कहा कि वाक़ई वह अपने बारे में यह बयान दे रहे हैं, इस पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने कहा कि अगर उन्होंने यह बयान किया है, तो सच फ़रमाया है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ने कहा कि अगर उन्होंने यह बयान किया है, तो सच फ़रमाया है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वे लोग कहने लगे कि क्या तुम इस बात की भी तस्दीक़ करते हो। उन्होंने फ़रमाया कि मैं तो इससे भी ज़्यादा अजीब बातों की तस्दीक़ करता हूं और वह यह कि आसमान से आपके पास ख़बर आती है, इसी वजह से उनका लक़ब सिद्दीक़ पड़ गया। —बैहक़ी : दलाइलुन्नुबूवत, भाग 2, पृ० 360, अल-बिदाया वन्निहाया

अल्लाह तआला ने बैतुल मक़्दिस को आपके सामने पेश फ़रमाया

मक्का के क़ुरैश तिजारत के लिए शाम जाया करते थे। बैतुलमक़्दिस उन्होंने देखा हुआ था। कहने लगे, अच्छा अगर आप रात बैतुलमक़्दिस गए थे, उसको देखा है उसमें नमाज़ पढ़ी है, तो बताइए बैतुलमक़्दिस में फ़्लां-फ़्लां चीज़ें कैसी हैं? यानी उसके स्तून और दरवाज़ों और दूसरी चीज़ों के बारे में सवाल करना शुरू किया। उस वक़्त आप हतीम में तशरीफ़ रखते थे। आपने फ़रमाया, उन लोगों के सवाल पर मुझे बड़ी बेचैनी हुई कि उस जैसी बेचैनी कभी नहीं हुई थी। मैंने बैतुलमक़्दिस को देखा तो था, लेकिन ख़ूब अच्छी तरह उसकी हर-हर चीज़ को महफ़ूज़ नहीं किया। इसका क्या अन्दाज़ा था कि इन चीज़ों के बारे में सवाल किए जाएंगे। अल्लाह तआला शानुहू ने बैतुलमक़्दिस को मेरी तरफ़ इस तरह उठा दिया कि मुझसे मक्का के क़ुरैश जो कुछ पूछते थे, मैं उन सबका जवाब देता रहा।

—सहीह मुस्लिम, भाग 1, पृ० 96

कुछ रिवायतों में यों है–

فجلّى الله لى بيت المقدس فطفقت اخبرهم عن اٰياته وانا بانظر اليه

(अल्लाह ने बैतुलमक़्दिस को मेरे लिए वाज़ेह तौर पर रोशन फ़रमा दिया। मैं उसे देखता रहा और उसकी जो निशानियां पूछ रहे थे, वह मैं उन्हें बताता रहा।) –सहीह बुख़ारी, भाग 1, पृ० 548

तफ़्सीर इब्ने कसीर भाग 3, पृ० 15 में है कि जब आपने बैतुल मक़्दिस की निशानियां सब बता दीं, तो वे लोग जो आपकी बात में शक करने की वजह से बैतुलमक़्दिस की निशानियां मालूम कर रहे थे, कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! बैतुलमक़्दिस के बारे में सही बयान दिया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का के क़ुरैश को यह भी बताया कि मुझे सफ़र में फ़्लां वादी में फ़्लां क़बीले का क़ाफ़िला मिला। उनका एक ऊंट भाग गया था। मैंने उन्हें बताया कि तुम्हारा ऊंट फ़्लां जगह पर है। उस वक़्त की बात है जब मैं बैतुल मक़्दिस की तरफ़ जा रहा था, फिर जब मैं वापस आ रहा था तो ज़जनान नामी जगह में पहुंचा तो देखा कि वे लोग सो रहे हैं। एक बरतन में पानी था जिसे उन्होंने किसी चीज़ से ढांक रखा था। मैंने उसका ढक्कन उठाया और पानी पीकर उसी तरह ढांक दिया जिस तरह ढका हुआ था कि अरब वाले पानी, दूध और दूसरी मामूली चीज़ों के बारे में आम तौर पर बे-इजाज़त ख़र्च करने पर एतराज नहीं करते थे। ऐसी चीज़ें बे-इजाज़त इस्तेमाल में लाना उनके यहां चलन में था। आम इजाज़त की वजह से खुली इजाज़त महसूस नहीं करते

थे। आपने आगे फ़रमाया कि देखो वह क़ाफ़िला तनईम की चोटी से ज़ाहिर होने वाला है। उनके आगे-आगे चितकबरे रंग का एक ऊंट है, उसके ऊपर सामान के दो बोरे हैं, एक काले रंग का, दूसरा सफ़ेद रंग का है। यह बात सुनकर वे लोग जल्दी-जल्दी तनईम की घाटी की ओर चल दिए। वहां देखा कि वाक़ई ज़िक्र किया गया क़ाफ़िला आ रहा है और उसके आगे-आगे वही ऊंट है। जब क़ाफ़िले पर गुज़रने की तस्दीक़ हो गई तो उन लोगों ने क़ाफ़िले वालों से पूछा कि तुमने किसी बरतन में पानी रखा था? उन्होंने कहा कि हां, हमने एक बरतन में पानी ढांक दिया था, फिर देखा कि वह बरतन उसी तरह ढंका हुआ है, लेकिन उसमें पानी नहीं है। फिर क़ाफ़िले वालों से सवाल किया कि क्या तुम्हारा कोई ऊंट बिदक गया था? उन्होंने कहा कि हां, हमारा एक ऊंट बिदक कर चला गया था, हमने एक आदमी की आवाज़ सुनी जो हमें बुला रहा था कि यह तुम्हारा ऊंट है यह आवाज़ सुनकर हमने उसे पकड़ लिया। कुछ रिवायतों में है कि आपने क़ाफ़िले वालों को सलाम भी किया था और उनमें कुछ सुनने वालों ने कहा कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आवाज़ है।[1]

हिरक़्ल क़ैसरे रूम के सामने एक पादरी की गवाही

सन् 06 हि० में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बादशाहों को इस्लामी दावत के ख़त लिखे, उनमें से एक हिरक़्ल के

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 14, अल-बिदाया वन्निहाया, भाग 3, पृ० 110, जमउल फ़वाइद

नाम भी था, जो रूमियों का बादशाह भी था। शाम उस वक़्त उसके तहत था। वह शाम आया हुआ था, उधर से हज़रत दह्य कलबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आपका वालानामा लेकर शाम पहुंचे और वह बसरा के गवर्नर को दे दिया, उसने हिरक़्ल को पहुंचा दिया। यह उस वक़्त की बात है जबकि मक्का के क़ुरैशियों का एक क़ाफिला तिजारत के लिए शाम देश पहुंचा हुआ था। हिरक़्ल ने कहा कि देखो, कुछ अरब के लोग आए हुए हों तो उन्हें बुलाओ, ताकि मैं उनसे उन साहब के बारे में मालूमात हासिल करूं, जिन्होंने मेरे पास ख़त लिखा है। चुनांचे ये लोग हिरक़्ल के दरबार में हाज़िर किए गए। हिरक़्ल ने पूछा, तुममें उन साहब से ज़्यादा क़रीब कौन है जो अपने को नबी बताते हैं। अबू सुफ़ियान भी ताजिरों के क़ाफ़िले में थे। अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं ज़्यादा क़रीब हूं। हिरक़्ल ने अबू सुफ़ियान से कहा कि देखो, मैं तुमसे सवाल करूंगा, सही जवाब देना। अबू सुफ़ियान उस वक़्त मुसलमान नहीं हुए थे, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़ालिफ़ थे। उन्होंने चाहा, कोई ऐसी बात कह दें जिससे आपकी हैसियत गिर जाए और नुबूवत के आपके दावे में वह आपको सच्चा न समझे।[1]

बहुत ही सोच-विचार के बाद अबू सुफ़ियान ने यह बात निकाली कि वे यह कहते हैं कि मैं मक्का की सर-ज़मीन से एक ही रात में आया और बैतुलमक़्दिस पहुंचा और फिर उसी रात में सुबह होने से पहले वापस मक्का पहुंच गया।

---

1. यहां तक तो सहीह बुख़ारी, भाग 1, पृ० 7 में ज़िक्र किया गया है।

अबू सुफ़ियान का ख़्याल था कि यह एक ऐसी बात है जिसकी वजह से क़ैसर आपके बारे में ज़रूर ही बद-गुमान हो जाएगा। (लेकिन हुआ यह कि) वहां क़ैसर के पास नसरानियों का एक पादरी खड़ा हुआ था, अबू सुफ़ियान की बात सुनकर वह पादरी बोला कि हां, मुझे उस रात का इल्म है, (जिसमें ऐसा वाक़िया हुआ है कि वहां कुछ लोग आए और उन्होंने नमाज़ पढ़ी।) क़ैसर ने उसकी तरफ़ देखा और मालूम किया कि तुझे इसका क्या पता है? उस पादरी ने कहा कि हर दिन रात को मस्जिद के दरवाज़े बन्द करके सोता था। उस रात जब मैंने सारे दरवाज़े बन्द कर दिए, लेकिन एक दरवाज़ा बन्द न हो सका, उस वक़्त वहां जो लोग मौजूद थे, मैंने उनसे मदद ली और हम सबने उसे हरकत देने की कोशिश की, लेकिन हम उसे हरकत न दे सके। ऐसा मालूम होता है जैसे हम किसी पहाड़ को उसकी जगह से हटा रहे हैं। उस पादरी ने बताया कि मैं तो दरवाज़े खुले छोड़ आया और जब सुबह को वापस आया तो देखा कि मस्जिद के कोने में पत्थर के अन्दर एक सूराख़ है और उसमें एक जानवर के बांधने का निशान है। यह देखकर मैंने अपने साथियों से कहा कि मालूम होता है कि यह दरवाज़ा आज इसलिए खुला रखा गया है कि यहां किसी नबी का आना हुआ है और उसने हमारी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ी है। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 24

मेराज के सफ़र की कुछ देखी बातें

मेराज के सफ़र में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत-सी चीज़ें देखीं जो हदीसें और हदीस की शरहों में जगह-जगह

बिखरी हुई हैं, जिनको इमाम बैहक़ी रह० ने 'दलाइलुन्नुबूवः' भाग 2 में और हाफ़िज़ नूरुद्दीन हेशमी ने मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 1 में और अल्लामा मुहम्मद बिन मुहम्मद सुलैमान अल-मग़्रिबी ने जमउज़्ज़वाइद, भाग 3 (एडीशन मदीना मुनव्वरा) में और हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अपनी तफ़्सीर में और अल्लामा इब्ने हिशाम ने अपनी सीरत में जमा किया है।

ऊपर की दुनिया में जो चीज़ें देखीं, पिछली रिवायतों में उनमें से बहुत सी ज़िक्र कर दी गई हैं, अब नीचे की दुनिया की कुछ देखी बातें नीचे लिखी जाती हैं।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को क़ब्र में नमाज़ पढ़ते हुए देखना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया कि जिस रात मुझे सैर कराई गई, मैं मूसा अलैहिस्सलाम पर गुज़रा, वह अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे।[1]

ऐसे लोगों पर गुज़रना जिनके होंठ क़ैंचियों से काटे जा रहे थे

हज़रत अनस रज़ि० से यह भी रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस रात मुझे सैर कराई गई, उस रात में, मैंने कुछ लोगों को देखा जिनेक होंठ आग की क़ैचियों से काटे जा रहे हैं। मैंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से मालूम

1. सहीह मुस्लिम, भाग 2, पृ० 368,

किया कि ये कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया कि आपकी उम्मत के ख़तीब (वक्ता) हैं, जो लोगों के भलाई का हुक्म करते हैं और अपनी जानों को भूल जाते हैं और एक रिवायत में यों है कि आपकी उम्मत के ख़तीब हैं जो ऐसी बातें करते हैं, जिन पर ख़ुद अमल नहीं करते और अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और अमल नहीं करते।[1]

कुछ लोग अपने सीनों को नाख़ूनों से छील रहे हैं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस रात मुझे मेराज कराई गई, मैं ऐसे लोगों पर गुज़रा, जिनके तांबे के नाख़ून थे। वे अपने चेहरों और सीनों को छील रहे थे। मैंने कहा, ऐ जिब्रील! ये कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया कि ये वे लोग हैं जो लोगों के गोश्त खाते हैं (यानी उनकी ग़ीबत करते हैं) और उनको बे-आबरू करने में पड़े रहते हैं। —मिश्कात (अबू दाऊद) पृ० 429

सूदख़ोरों की बदहाली

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस रात मुझे सैर कराई गई, मैं ऐसे लोगों पर गुज़रा, जिनके पेट इतने बड़े-बड़े थे, जैसे इंसानों के रहने के घर होते हैं। उनमें सांप थे जो बाहर से उनके पेटों में नज़र आ रहे थे। मैंने कहा, ऐ जिब्रील! ये कौन लोग

1. मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 438

हैं? उन्होंने कहा, ये सूद खानेवाले हैं।[1]

फ़रिश्तों का पछना लगाने के लिए ताकीद करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेराज में पेश आने वाली जो बातें बयान फ़रमाईं, उनमें एक बात यह भी थी कि आप फ़रिश्तों की जिस जमाअत पर भी गुज़रे, उन्होंने कहा कि आप अपनी उम्मत को हजामत यानी पछने लगाने का हुक्म दीजिए।

—मिश्कातुल मसाबीह पृ० 389 (तिर्मिज़ी व इब्ने माजा)

अरब में पछने लगाने का बहुत रिवाज था, इससे ज़ाइद ख़ून और फ़ासिद ख़ून निकल जाता है। ब्लड प्रेशर का मरज़ जो आम हो गया है, उसका बहुत अच्छा इलाज है, लोगों ने उसे बिल्कुल ही छोड़ दिया है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सर और मोंढों के दर्मियान पछने लगवाए थे।[2]

मुजाहिदों का सवाब

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया था कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिब्रील के साथ चले तो आपका ऐसी क़ब्र पर गुज़र हुआ जो एक दिन ही में बीज बोते हैं और एक ही दिन में काट भी लेते हैं और काटने के बाद फिर वैसी ही हो जाती है, जैसे पहली थी। आपने जिब्रील अलैहिस्सलाम से मालूम किया, ये

1. मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 246
2. मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 246

कौन लोग है? जिब्रील ने कहा कि ये लोग अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले हैं। इनकी एक नेकी सात सौ गुना तक बढ़ा दी जाती है और ये लोग जो कुछ भी करते हैं, अल्लाह तआला उसका बदल अता फ़रमाता है।

कुछ लोगों के सर पत्थरों से कुचले जा रहे थे

फिर आपका एक और क़ौम पर गुज़र हुआ, जिनके सर पत्थरों से कुचले जा रहे थे। कुचले जाने के बाद फिर वैसे ही हो जाते हैं जैसे पहले थे। इसी तरह सिलसिला जारी है, ख़त्म नहीं होता। आपने पूछा, ये कौन लोग हैं? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा कि ये वे लोग हैं जो नमाज़ से काहिली करने वाले हैं, सोते हुए रह जाते हैं।

ज़कात न देने वालों की बदहाली

फिर एक और क़ौम पर गुज़र हुआ कि जिनकी शर्मगाहों पर आगे और पीछे चीथड़े लिपटे हुए हैं और ऊंट और बैल की तरह चरते हैं और ज़रीअ और ज़क़्क़ूम[1] यानी कांटेदार ख़बीस पेड़ और जहन्नम के पत्थर खा रहे हैं। आपने पूछा, ये कौन लोग हैं? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा कि ये वह लोग हैं जो अपने मालों की ज़कात नहीं देते।

सड़ा हुआ गोश्त खाने वाले लोग

फिर आपका एक ऐसी क़ौम पर गुज़र हुआ जिसके सामने एक हांडी में पका हुआ गोश्त है और एक हांडी में कच्चा और सड़ा हुआ

1. ज़रीअ आग के कांटे और ज़क़्क़ूम दोज़ख़ का सबसे बुरी बदबू वाला पेड़।

गोश्त रखा है, ये लोग सड़ा हुआ गोश्त खा रहे हैं और पका हुआ गोश्त नहीं खाते। आपने मालूम किया कि ये कौन लोग हैं? जिब्रील ने कहा कि यह आपकी उम्मत का वह आदमी है जिसके पास हलाल और तैयब औरतें मौजूद हैं, मगर वह एक ज़ानी और बेहया औरत के साथ रात गुज़ारता है और सुबह तक उसी के पास रहता है और आपकी उम्मत की वह औरत है जो हलाल और तैयब शौहर को छोड़ कर किसी ज़ानी और बदकार के साथ रात गुज़ारती है।

लकड़ियों का बड़ा गठ्ठर उठाने वाला

फिर एक ऐसे आदमी पर आपका गुज़र हुआ जिसके पास लकड़ियों का बहुत बड़ा गठ्ठर है, वह उसे उठा नहीं सकता, लेकिन और ज़्यादा बढ़ाना चाहता है। आपने मालूम किया कि यह कौन आदमी है? जिब्रील ने बताया, यह वह आदमी है जिसके पास लोगों की अमानतें हैं, उनकी अदाएगी की ताक़त नहीं रखता और ज़्यादा अमानतों का बोझ अपने सर पर लेने को तैयार है।

एक बैल का छोटे से सूराख़ में दाख़िल होने की कोशिश करना

इसके बाद एक ऐसे सूराख़ पर गुज़र हुआ जो छोटा-सा था, उसमें से एक बड़ा बैल निकला। बैल चाहता है कि जहां से निकला है, फिर उसी में दाख़िल हो जाए। आपने फ़रमाया, यह कौन है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा, यह वह आदमी है जो कोई बड़ा कलिमा कह देता है, (जो गुनाह का कलिमा होता है) उस पर वह

शर्मिन्दा होता है और चाहता है कि उसको वापस कर दे, फिर वह उसकी ताक़त नहीं रखता।

जन्नत की ख़ुश्बू

फिर आप एक ऐसी वादी पर पहुंचे जहां ख़ूब अच्छी ख़ुश्बू आ रही थी और वह ख़ुश्बू मुश्क थी और आवाज़ भी थी। आपने फ़रमाया, यह क्या है? जिब्रील ने कहा, यह जन्नत की आवाज़ है। वह कह रह रही है कि ऐ मेरे रब! जो लोग मेरे अन्दर रहने वाले हैं, उनको लाइए और अपना वायदा पूरा फ़रमाइए।

दोज़ख़ की आवाज़ सुनना

इसके बाद एक ऐसी वादी पर गुज़र हुआ, जहां 'सौते मुन्कर' यानी ऐसी आवाज़ सुनी जो नागवार थी। आपने मालूम किया, यह क्या है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि यह जहन्नम है, यह अल्लाह के दरबार में अर्ज़ कर रही है कि जो लोग मेरे अन्दर रहने वाले हैं, उनको ले आइए और अपना वायदा पूरा फ़रमाइए।[1]

कुछ लोगों की खालें क़ैंचियों से काटी जा रही थीं

हज़रत राशिद बिन साद ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मुझे मेराज कराई गई तो मैं ऐसे लोगों पर गुज़रा जिनकी खालें आग की क़ैंचियों से काटी जा रही थीं। मैंने कहा, ऐ जिब्रील! ये कौन

1. जमउल फ़ुवाद, भाग 1, पृ० 151, एडीशन मदीना मुनव्वरा

लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया, ये वे लोग हैं जो ज़िना करने के लिए ज़ीनत अख़्तियार करते हैं। फिर मैं ऐसे बदबूदार धड़े पर गुज़रा जिससे बहुत सख़्त आवाज़ें आ रही थीं। मैंने कहा, ऐ जिब्रील! ये कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया, ये वह औरतें हैं जो ज़िनाकारी के लिए बनती-संवरती हैं और वे काम करती हैं जो उनके लिए हलाल नहीं।[1]

एक शैतान का पीछे लगना

मुअत्ता इमाम मालिक में यह्या बिन सईद की रिवायत मुरसलन नक़ल की गई है कि जिस रात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सैर कराई गई, तो आपने जिन्नात में से एक जिन्न को देखा जो आग का शोला लिए हुए आपका पीछा कर रहा था। आप जब भी (दाहिने-बाएं) नज़र डालते, वह नज़र पड़ जाता था। जिब्रील ने अर्ज़ किया, क्या मैं आपको ऐसे कलिमे न बता दूं कि उनको आप पढ़ लेंगे, तो उसका शोला बुझ जाएगा और यह अपने मुंह के बल गिर पड़ेगा? आपने फ़रमाया कि हां बता दो। इस पर जिब्रील ने कहा कि ये कलिमे पढ़ें—

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ اللَّاتِي لَايُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَافَاجِرٌ مِنْ شَرِّمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَشَرِّمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَشَرِّمَا ذَرَأَ فِي الْاَرْضِ، وَشَرِّمَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ فِتَنِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَمِنْ طَوَارِقِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّارَحْمٰنُ ط

---

1. अल-तर्ग़ीब वत-तर्हीब, भाग 3, पृ० 511

मेराज शरीफ़ से मुताल्लिक़ हुक्म के फ़ायदे और राज़

बुर्राक़ क्या था और कैसा था?

लफ़्ज़ बुर्राक़ बरीक़ से बना है जो सफ़ेदी के मानी में आता है और एक क़ौल यह भी है कि यह लफ़्ज़ बर्क़ से लिया गया है। बर्क़ बिजली को कहते हैं, इसकी तेज़ रफ़्तारी तो मालूम ही है। इसी तेज़ रफ़्तारी की वजह से बर्राक़ का नाम बुर्राक़ रखा गया। हदीस की रिवायतों से यह मालूम होता है कि इस बुर्राक़ पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले भी अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम सवार होते थे। इमाम बैहक़ी ने दलाइलुन्नुबूवः, भाग 2, पृ० 39 में फ़रमाया है—

'और अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु मुझसे पहले बुर्राक़ पर सवार होते रहे हैं।'

बुर्राक़ की शोख़ी और उसकी वजह

सुनने तिर्मिज़ी (तफ़्सीरे सूरः इसरा) में है कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस रात मुझे सैर कराई गई, मेरे पास बुर्राक़ लाया गया और ज़ीन कसी हुई थी। बुर्राक़ शोख़ी करने लगा। जिब्रील ने कहा कि तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ शोख़ी करता है। तेरे साथ कोई भी ऐसा आदमी

सवार नहीं हुआ जो अल्लाह के नज़दीक मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) से ज़्यादा मुकर्रम व मुअज़्ज़ज़ हो। यह सुनते ही बुर्राक़ पसीना-पसीना हो गया। फिर उसने अपनी नाफ़रमानी का अन्दाज़ छोड़ दिया।—तिर्मिज़ी

दलाइलुन्नुबूवः में है कि आपने फ़रमाया कि जब बुर्राक़ ने शोख़ी की तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने उसका कान पकड़ कर घुमा दिया, फिर मुझे उस पर सवार करा दिया।[1]

कुछ रिवायतों में है कि जब हम बैतुलमक़्दिस पहुंचे तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अपनी उंगली से पत्थर में सूराख़ कर दिया, फिर उस सूराख़ से आपने बुर्राक़ को बांध दिया। —इब्ने कसीर

बुर्राक़ ने शोख़ी क्यों की? इसके बारे में कुछ लोगों का कहना है कि चूंकि एक लम्बी मुद्दत गुज़र चुकी थी और फ़ितरत के ज़माने में (यानी इस लम्बी मुद्दत में, जबकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत सैयदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान कोई नबी नहीं आया था) बुर्राक़ पर कोई सवार नहीं हुआ, वह नई-सी बात देखकर चमकने लगा[2] और कुछ लोगों का यों कहना है कि बुर्राक़ का चमकना और शोख़ी करना, ख़ुशी और फ़ख़्र के तौर पर था कि आज मुझ पर आख़रुल अंबिया और अफ़ज़लुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सवार हो रहे हैं।[3] यह ऐसा ही है जैसे कि एक बार आप हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० के साथ शब्बीर पहाड़ पर थे। वह पहाड़

1. दलाइलुन्नुबूवः, भाग 2, पृ० 355,
2. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 207
3. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 207

हरकत करने लगा। आपने फ़रमाया, ठहर जा, तेरे ऊपर एक नबी है, एक सिद्दीक़ है और दो शदीद हैं।[1]

अल्लाह को इस पर कुदरत है कि बग़ैर बुर्राक़ के सफ़र करा सकता है, लेकिन आपको पूरी इज़्ज़त और तक्रीम के साथ बुर्राक़ पर सवार करके ले जाया गया। अगर सवारी न होती तो गोया पैदल सफ़र होता, क्योंकि सवार पैदल चलने वाले के मुक़ाबले में ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ होता है, इसलिए आपको सवारी पर सफ़र कराया गया है।[2]

हज़रत जिब्रील का बैतुल मक़्दिस तक आपके साथ बुर्राक़ पर सवार होना और वहां से ज़ीने के ज़रिए आसमानों पर जाना

जब मक्का मुअज़्ज़मा से बैतुल मक़्दिस के लिए रवानगी हुई तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम भी आपके साथ बुर्राक़ पर सवार हो गए, आपको पीछे बिठाया और ख़ुद रहबर (गाइड) के तौर पर आगे सवार हुए।[3] दोनों बुर्राक़ पर सवार होकर बैतुल मक़्दिस पहुंचे। वहां दोनों ने दो-दो रकूअत नमाज़ पढ़ी। फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रात अंबिया किराम को नमाज़ पढ़ाई। जब आसमानों की तरफ़ तशरीफ़ ले जाने लगे तो एक एक ज़ीना लाया गया, जो बहुत ही ज़्यादा ख़ूबसूरत था और कुछ रिवायतों में है कि एक ज़ीना सोने का और एक ज़ीना चांदी का था और एक रिवायत में है कि वह मोतियों

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 207
2. मिश्कातुल मसाबीह, भाग 1, पृ० 562
3. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 218

से जड़ा हुआ था। ऊपरी दुनिया का सफ़र करते वक़्त दाएं-बाएं फ़रिश्ते थे। आंहज़रत सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम दोनों ज़ीने के ज़रिए आसमान तक पहुंचे और आसमान का दरवाज़ा खुलवाया।[1]

बाबुल हफ़ज़ा

पहले आसमान के दरवाज़े के बारे में फ़रमाया कि वह बाबुल हमज़ा है और फ़रमाया कि इस पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है जिसका नाम इस्माईल है। उसके मातहत बारह हज़ार फ़रिश्ते हैं और हर फ़रिश्ते के मातहत बारह हज़ार हैं। आंहज़रत सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात बयान फ़रमाई तो यह आयत तिलावत की—

وَمَايَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوط

'व मा यालमु जुनू-द रब्बि-क इल्ला हु-व' (तुम्हारे रब की फ़ौज़ों को उसके अलावा कोई नहीं जानता।)[2]

पहले आसमान पर जहन्नम के दारोग़ा से मुलाक़ात होना और जहन्नम का देखना

जब आप 'समाए दुनिया' यानी क़रीब वाले आसमान में दाख़िल हुए तो जो भी फ़रिश्ता मिलता था, हंसते हुए बशाशत और ख़ुशी के साथ मिलता था और ख़ैर की दुआ देता था। उन्हीं में एक ऐसे फ़रिश्ते से मुलाक़ात हुई, जिसने मुलाक़ात भी की और दुआ भी दी,

1. फ़त्हुलबारी, भाग 1, पृ० 307-308, 309
2. सीरत इब्ने हिशाम

लेकिन वह हंसा नहीं। आपने जिब्रील से पूछा, यह कौन-सा फ़रिश्ता है? उन्होंने जवाब दिया कि यह मालिक है जो दोज़ख़ का दारोग़ा है। यह अगर आपसे पहले या आपके बाद किसी के लिए हंसता, तो आपकी मुलाक़ात के वक़्त आपके सामने उसे हंसी आ जाती, यह फ़रिश्ता हंसता ही नहीं है। आपने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि इस फ़रिश्ते से कहिए कि मुझे दोज़ख़ दिखा दे। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने उससे कहा कि 'ऐ मालिक! मुहम्मद को दोज़ख़ दिखा दो'। इस पर उस फ़रिश्ते ने दोज़ख़ का ढक्कन उठाया, जिसकी वजह से दोज़ख़ जोश मारती हुई ऊपर उठ आई। आपने फ़रमाया, ऐ जिब्रील! इसको कहिए कि दोज़ख़ को अपनी जगह वापस कर दे। चुनांचे जिब्रील ने उस फ़रिश्ते से कहा कि इसको वापस कर दो। फ़रिश्ते ने उसे वापस होने का हुक्म दिया, जिस पर वह वापस चली गई, उसने ढक्कन ढक दिया।

आसमान की हिफ़ाज़त करने वालों ने हज़रत जिब्रील से यह सवाल क्यों किया कि आपके साथ कौन हैं, क्या उन्हें बुलाया गया है?

जिब्रील अलैहिस्सलाम ने जब दरवाज़ा खुलवाया तो आसमानों के ज़िम्मेदारों ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से यह सवाल किया कि आपके साथ कौन हैं? उन्होंने जवाब दिया कि मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) हैं। इस पर सवाल हुआ, क्या इन्हें बुलाया गया है? हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम जवाब देते रहे कि हां, इन्हें बुलाया गया है, इस पर दरवाज़े खोले जाते रहे और आप ऊपर पहुंचते रहे। यहां यह सवाल

पैदा होता है कि ऊपर के लोगों ने ये सवाल क्यों किए? क्या जिब्रील अलैहिस्सलाम के बारे में यह गुमान था कि वे किसी ऐसी शख़्सियत को ले आए होंगे, जिसे ऊपर न बुलाया गया हो? इसका जवाब यह है कि ऊपर के लोगों को यह पहले से मालूम था कि आज कोई आने वाला है, लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शरफ़ बढ़ाने के लिए और ख़ुशी ज़ाहिर करने के लिए यह सवाल-जवाब हुआ और उसमें हिक्मत यह भी थी कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पता चल जाए कि आपका मोहतरम नाम ऊपर के लोगों में मशहूर है। जब यह सवाल किया गया कि आपके साथ कौन है तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि मुहम्मद हैं। अगर वे आपके मुबारक नाम को न जानते होते और आपकी शख्सियत का तआरुफ़ न होता, तो यों सवाल करते कि मुहम्मद कौन हैं? इसी से पहले से दरवाज़ा न खोलने की हिक्मत भी मालूम हो गई और वह यह है कि आपको बताना था कि आपसे पहले ज़मीन के रहने वालों में से किसी के लिए इस तरीक़े पर आसमान का दरवाज़ा नहीं खोला गया कि वफ़ात से पहले दुनिया की ज़िंदगी में होते हुए क़ासिद को भेजकर बुलाया गया हो। जहां अक्सर मेहमान आते हों और बार-बार आते रहते हों, वहां यही बात है कि पहले से दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। दुनिया में ऐसा ही होता है और चूंकि हर मेहमान के लिए दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, इसलिए इसमें किसी खुसूसियत और इम्तियाज़ का इज़्हार नहीं होता, लेकिन मेराज का मेहमान बेमिसाल मेहमान है, न इससे पहले किसी को यह मेहमानी नसीब हुई, न इसके बाद और मेहमानी भी ऐसी नसीब हुई

कि अमरीका वाला एशिया चला आया, एशिया वाला अफ़्रीक़ा चला गया यानी ख़ाकी इंसान ख़ाक ही पर घूमता रहा, बल्कि वह ऐसी मेहमानी थी कि ख़ाकी फ़र्श पर रहने वाला सात आसमानों से गुज़रता हुआ सिदरतुल मुन्तहा तक पहुंच गया, जहां उस चहेते मेहमान के सिवा कोई नहीं पहुंचा। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही बिक़द्रि कमालिही व जमालिही

चूंकि इंसानों में से वहां कोई नहीं जाता और वहां की राह में बदलाव नहीं है, इसलिए हिक्मत का तक़ाज़ा यह हुआ कि हर-हर आसमान का दरवाज़ा आने पर खोला जाए ताकि वहां के शौक़ रखने वालों और ठहरे हुए लोगों को मुअज़्ज़ज़ मेहमान का दर्जा मालूम होता चला जाए और यह जान लें कि यह कोई ऐसी हस्ती नहीं है जिसको बग़ैर दरख़्वास्त के बुलाया गया है और जिसके लिए आज वे दरवाज़े खोले जा रहे हैं जो कभी किसी के लिए न खोले गए। हक़ीक़त में यह एज़ाज़ उस एज़ाज़ से ज़्यादा है कि पहले से दरवाज़े खुले रहें जो दूसरों के लिए भी खुले रहे हों।[1]

ज्यों ही कोई दरवाज़ा खटखटाया गया, उस आसमान के रहने वाले मुतवज्जह हुए और यह समझ लिया कि किसी अहम शख़्सियत का आना-आना है और फिर जिब्रील अलैहि० से सवाल व जवाब हुआ। इससे हाज़िर लोगों को मेहमान का तआरुफ़ हुआ और शख़्सियत का पता चला। पहले सबने मेहमान का नाम सुना, फिर ज़ियारत की। मेहमान के आने के बाद जो तआरुफ़ मौजूद लोगों से कराया जाता है, वह दरवाज़ा खटखटाने और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के नाम

1. फ़त्हुल बारी, भाग 1, पृ० 411,

मालूम करने से हो गया। ज़ाहिर है आने की आम ख़बर से यह बात हासिल न होती और चूंकि अल्लाह रब्बुल आलमीन की हाज़िरी के लिए यह सफ़र था और फ़रिश्तों की ज़ियारत या फ़रिश्तों को ज़ियारत करना सबसे बड़ा मक़्सद न था, इसलिए हर जगह क़ियाम करने का मौक़ा न मिला। ऊपर के लोग मुतवज्जह होते रहे और आपकी ज़ियारत करते रहे और आप आगे बढ़ते चले गए। दुनिया में इस्तक़बाल के लिए इस्तक़बालिया कमेटी के लोगों को पहले से जमा करना पड़ता है, क्योंकि दुनिया के वसीलों को देखते हुए अचानक सब का हाज़िर होना मुश्किल होता है, ला महाला पहले आने की कोशिश करते हैं, ताकि वक़्त न निकल जाए, लेकिन ऊपरी दुनिया के रहने वालों को वे ताक़तें हासिल हैं कि एक लम्हे में हज़ारों मील का सफ़र करके जमा हो सकते हैं, दरवाज़ा खटखटाया है, भनक पड़ी सब हाज़िर हो गए। दरवाज़ा खोलते वक़्त सब मौजूद हैं।

दूध, शहद और शराब का पेश किया जाना और आपका दूध को ले लेना

सहीह मुस्लिम में जो पृ० 91 पर रिवायत नक़ल की गई है, उसमें यों है कि बैतुल मक़्दिस ही में एक बरतन में शराब और एक बरतन में दूध पेश किया गया है। इसके रिवायत करने वाले हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। सहीह मुस्लिम की दूसरी रिवायत जो पृ० 95 पर ज़िक्र की गई है, जिसके रिवायत करने वाले हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, उसमें यों है कि ऊपर की दुनिया में सिदरतुल मुन्तहा के क़रीब पीने की चीज़ें पेश की गईं, उसमें यह भी

है कि आपने दूध ले लिया और हज़रत इमाम बुख़ारी रह० की रिवायत में यह है कि बैतुल मामूर सामने किए जाने के बाद एक बरतन में शराब, एक बरतन में दूध, एक बरतन में शहद पेश किया गया। बैतुलमक्दिस में भी पीने के लिए कुछ चीज़ें पेश की गई हों और फिर ऊपरी दुनिया में ख़िदमत में लाई गई हों, इसमें कोई टकराव नहीं, दोबारा पेश किए जाने में न अक़्लन, न नक़्लन, कोई ऐसी बात नहीं है जिसका इन्कार किया जाए। सहीह बुख़ारी में एक चीज़ यानी शहद का ज़िक्र ज़्यादा है, इसमें कोई इश्काल की बात नहीं। कभी-कभी कुछ रिवायत करने वालों से कोई चीज़ रह जाती है, जिसे दूसरा ज़िक्र कर देता है।[1]

सहीह मुस्लिम की रिवायत पृ० 97 पर यह भी है कि जब आपने दूध ले लिया तो हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया कि अगर आप शराब ले लेते तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती। इससे मालूम हुआ कि लीडर और रहनुमा के अख़्लाक़ और आमाल का असर उसके मानने वालों पर भी पड़ता है।[2]

---

1. फ़त्हुल बारी, भाग 1, पृ० 215 में अल्लामा क़ुरतबी से नक़ल किया है कि दूध के बारे में जो फ़रमाया गया, मुम्किन है इस वजह से हो कि जब बच्चा पैदा होता है तो उसके पेट में दूध दाख़िल होता है और वही उसकी आंतों को फैला देता है और हर बच्चा इस्लामी फ़ितरत पर पैदा होता है, इसलिए फ़ितरी तौर पर इस्लाम की फ़ितरत और बच्चे की शुरूआती ग़िज़ा में एक मुनासबत हुई, इसलिए फ़ितरत से दीने इस्लाम मुराद लिया।
2. हज़रत हकीमुल उम्मत थानवी क़द्द-स सिर्रहू लिखते हैं कि रिवायतों में ग़ौर करने से मालूम होता है कि (जो बरतन पेश किए गए) वे चार थे—दूध, शहद, ख़म्र और पानी। किसी ने दो के ज़िक्र को काफ़ी समझा, किसी ने तीन के ज़िक्र

सिदरतुल मुन्तहा क्या है?

हदीस की रिवायतों में सिदरतुल मुन्तहा दो तरीक़ों से आया है, क़ुरआन मजीद में भी सिदरतुल मुन्तहा आया है। इस पेड़ के नाम को मुन्तहा से क्यों जोड़ा गया, इसके बारे में सहीह मुस्लिम में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ऊपर से जो हुक्म भी आते हैं, वे इस पर ख़त्म हो जाते हैं और जो बन्दों के अमल नीचे से ऊपर जाते हैं, वहां पर ठहर जाते हैं। (आने वाले हुक्म पहले वहां आते हैं, फिर वहां से उतरते हैं और नीचे से जाने वाले जो अमल हैं, वे वहां ठहर जाते हैं, फिर ऊपर उठाए जाते हैं।)

पहले गुज़र चुका है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि उस पर जो चीज़ें छायी हुई थीं, उनकी वजह से जो उसका हुस्न था, उसे अल्लाह की मख़्लूक़ में से कोई भी आदमी बयान नहीं कर सकता और दूसरी हदीस में है कि आपने फ़रमाया कि उस पर सोने के परवाने छाए हुए थे।[1]

को या यह कि तीन हों। एक प्याले में पानी हो कि दूध में शहद जैसा हो, कभी उसको शहद कह दिया हो और कभी पानी और हर चन्द कि शराब उस वक़्त हराम न थी, क्योंकि मदीना में हराम हुई हैं, मगर सामाने निशात ज़रूर है,इसलिए मुशाबह दुनिया के है, शहद भी अक्सर लज़्ज़त के लिए पिया जाता है, ग़िज़ा के लिए नहीं। तो यह भी ज़ायद चीज़ नहीं हुई और इशारा दुनिया की लज़्ज़तों की तरफ़ हुआ और पानी भी मददगार ग़िज़ा है, ग़िज़ा नहीं, जिस तरह दीन ग़िज़ा है, मक़्सूद नहीं और दीन से ख़ुद रूहानी ग़िज़ा मक़्सूद है जैसाकि दूध जिस्मानी ग़िज़ा मक़्सूद है और जो ग़िज़ाएं और भी हैं, मगर दूध को औरों पर तर्जीह है कि यह खाने और पीने दोनों का काम देता है।

—फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 215

1. सहीह मुस्लिम, पृ० 97,

उस पेड़ के बारे में यह भी हदीस में आया है कि उसकी शाख़ों के साए में एक सवार सौ साल तक चल सकता है[1] या यों फ़रमाया कि उसके साए में सौ सवार साया ले सकते हैं।[2]

٢. قال النووی۔ قال ابن عباس والمفسرون وغیرهم سمّیت سدرة المنتهی لان علم الملائکة ینتهی الیها ولم یجازها احد الّا رسول اللّٰه ﷺ وحکی عن عبداللّٰه بن مسعود رضی اللّٰه عنه انما سمیت بذلك لکونها ینتهی الیها مایهبط من فوقها ومایصعد من تحتها من امر اللّٰه تعالیٰ۔

जन्नत में दाख़िल होना और नहर कौसर का देखना

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस बीच में जबकि मैं जन्नत में चल रहा था, अचानक एक ऐसी नहर मौजूद पाया, जिसके दोनों किनारों पर ऐसी मोतियों के क़ुब्बे हैं जो बीच में से ख़ाली हैं। (यानी पूरा क़ुब्बा एक मोती का है) मैंने कहा, ऐ जिब्रील! यह क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि यह नहर कौसर है जो आपके रब ने आपको अता फ़रमाई है। मैंने जो ध्यान दिया तो क्या देखता हूं कि इसमें जो मिट्टी है, (जिसकी सतह पर पानी है) वह ख़ूब तेज़ ख़ुश्बू वाला मुश्क है। —बुख़ारी

1. मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 498 (तिर्मिज़ी)
2. सहीह मुस्लिम, भाग 1, पृ० 92

नबियों की मुलाक़ात रूहानी थी या जिस्म के साथ थी

हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं। हुज़ूर सल्ल० का नबियों का बैतुल मक़्दिस और आसमानों में देखना, इससे या तो उनकी मुबारक रूहों को देखना मुराद है या जिस्मों के साथ देखना मुराद है कि हुज़ूर सल्ल० के एज़ाज़ व इक्राम के लिए नबियों से मय जिस्म के मस्जिदे अक़्सा और आसमानों में बुलाया गया था, चूंकि तमाम नबी अपनी क़ब्रों में जिस्मों के साथ ज़िंदा हैं, जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

ان الله حرم على الارض اجساد الانبياء

(बेशक अल्लाह ने ज़मीन पर नबियों के जिस्मों को हराम कर दिया है, वह उनके जिस्मों को कभी खा नहीं सकती।) और बरज़ख़ के हाल को दुनिया के हाल पर क़ियास भी नहीं किया जा सकता, इसीलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मूसा को उनकी क़ब्र में नमाज़ पढ़ते हुए देखा, इसलिए कोई टकराव नहीं है कि सब नबियों को मस्जिदे अक़्सा में आपने उनके जिस्म के साथ मौजूद पाया और उन्हें नमाज़ पढ़ाई। फिर आसमानों में तशरीफ़ ले गए तो वहां भी नबियों में से जिनसे भी मुलाक़ात हुई, वे वहां अपने जिस्मों के साथ मौजूद थे।

और कुछ उलेमा ने यह फ़रमाया कि नबियों के जिस्म तो क़ब्रों ही में रहे और अल्लाह ने उनकी रूहों को उसी जैसा जिस्म देकर भेज दिया और उसी हाल में आपके पीछे नमाज़ पढ़ी और फिर ऊपर

आसमानों में मुलाक़ातें हुई, अलबत्ता हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम चूंकि ज़िंदा ही उठा लिए गए थे और अभी उनका दुनिया में आना और वफ़ात पाना बाक़ी है, इसलिए उनसे जो मुलाक़ात हुई, वह उसी जिस्म के साथ हुई जो दुनिया में उनका जिस्म था और चूंकि यह मुलाक़ात उनकी वफ़ात से पहले है, इसलिए उनको आंहज़त सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में भी गिना गया है।[1]

आसमानों में नबियों (अलैहिमुस्सलाम) से जो मुलाक़ातें हुईं उनकी तर्तीब के बारे में क्या हिक्मत है?

हज़रत सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नबियों को बैतुलमक़्दिस में नमाज़ पढ़ाई, फिर इन लोगों में से जिस-जिससे ऊपर मुलाक़ात करानी थी, वे लोग आपसे पहले आसमानों में पहुंच चुके थे, इनमें से जिन लोगों से आपकी मुलाक़ात हुई, उनमें पहले आसमान पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, फिर ऊपर तश्रीफ़ ले जाते रहे और दूसरे आसमानों में दूसरे नबियों से मुलाक़ातें हुईं। इन मुलाक़ातों की तर्तीब के बारे में कुछ लोगों ने हिक्मत बताई है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात में यह बताना था, जैसे वह जन्नत से निकाले गए जो उस वक़्त उनका पैदाइशी वतन था, उसी तरह आपको भी मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना के लिए हिजरत का मौक़ा आएगा। (मशहूर क़ौल के मुताबिक़ चूंकि मेराज का वाक़िया मदीना मुनव्वरा की हिजरत से कुछ ही दिनों पहले पेश आया था, इसलिए पहले आसमान में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 210, अल-इसाबा, भाग 3, पृ० 35

से मुलाक़ात कराई गई।)

हज़रत ईसा और हज़रत यह्या अलैहिमस्सलाम से दूसरे आसमान में मुलाक़ात हुई, उसमें यह बताया कि हिजरत के बाद शुरू ही में यहूदी दुश्मनी करेंगे और उनकी सरकशी बढ़ती चली जाएगी और आपको तक्लीफ़ पहुंचाने के इरादे करते रहेंगे, (जैसा कि उन्होंने हज़रत ईसा और हज़रत यह्या अलैहिमस्सलाम से किया।)

तीसरे आसमान में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। उसमें हिक्मत यह है कि जिस तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने उनके साथ ज़्यादती की, उसी तरह आपके क़ुरैश भाई आपसे दुश्मनी करेंगे और जंग करने के लिए दारुल हिजरत में पहुंचेंगे, फिर जिस तरह अच्छा अंजाम हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हासिल हुआ, आपको भी यह नेमत हासिल होगी। चुनांचे मक्का मुअज़्ज़मा फ़त्ह हुआ और आपकी मुबारक ज़ुबान से मक्का के क़ुरैश के लिए वही बात निकली जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों से कही थी कि—

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ

'ला तसरी-ब अलै कुमुल यौम'

चौथे आसमान में हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। उनके तज़्करे में क़ुरआन मजीद में फ़रमाया गया है—

'वरफ़अनाहु मका नन अलीया'

उनकी मुलाक़ात में इस तरफ़ इशारा था कि आपको भी अल्लाह ने ऊंचा रुत्बा अता फ़रमाया है।

पांचवें आसमान में हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। उनको यह बताना है कि जैसे हारून अलैहिस्सलाम को उनकी क़ौम ने अज़ीयत (पीड़ा) दी, फिर वह अपनी क़ौम में महबूब हो गए, उसी तरह अपनी क़ौम की ईज़ाओं के बाद आप महबूब हो जाएं।

छठे आसमान में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। उनकी मुलाक़ात में इस तरफ़ इशारा था कि जैसे उनकी क़ौम ने आपको सताया, इसी तरह के वाक़िए आपको भी पेश आएंगे। इसको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मौक़े पर यों इर्शाद फ़रमाया—

لقد اوذی موسٰی باکثر من ھٰذا فصبر

सातवें आसमान में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, वह अल-बैतुल मामूर में टेक लगाए हुए बैठे थे। इससे यह बताया कि आपकी आख़िरी उम्र में आपको हज की रस्में अदा करने का मौक़ा दिया जाएगा और आपके ज़रिए अल्लाह के घर की अज़्मत क़ायम होगी।[1] (हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से सबसे आख़िर में मुलाक़ात हुई। उन्होंने काबा शरीफ़ बनाया था और ऊपरी दुनिया में बैतुल मामूर से टेक लगाए हुए थे जो काबा शरीफ़ के किनारे पर है। यहां ज़मीन पर बनी आदम (आदम की औलाद) काबा शरीफ़ का तवाफ़ करते हैं और वहां रोज़ाना फ़रिश्ते बैतुल मामूर में दाख़िल होते हैं। यह लतीफ़ मुनासबत है।

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 210-211

शेख़ इब्ने अबी जमरा का इर्शाद

शेख़ अबी जमरा ने भी नबियों की मुलाक़ातों की तर्तीब के बारे में कुछ हिक्मतें बताईं, उन्होंने बताया कि सबसे क़रीब वाले आसमान में आदम अलैहिस्सलाम से इसलिए मुलाक़ात हुई कि वह पहले नबी भी हैं और पहले बाप भी हैं। वह नबी भी हैं और आपके बाप भी हैं और दूसरे आसमान में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, क्योंकि उनका ज़माना आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने से ज़्यादा क़रीब था, क्योंकि आपके और उनके दर्मियान कोई नबी नहीं गुज़रा।

और तीसरे आसमान में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, क्योंकि आपकी उम्मत हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की सूरत पर जन्नत में दाख़िल होगी।

और चौथे आसमान में हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, उनके बारे में अल्लाह तआला का इर्शाद है—

وَرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا

और चौथा आसमान सातों आसमानों के दर्मियान है।[1]

---

1. अल्लामा सुहैली ने 'अर्रौज़तुल अनफ़' में बहुत ही अच्छी बात लिखी है और वह यह कि हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम सबसे पहले वह आदमी हैं जिन्हें अल्लाह ने लिखना सिखाया था। चौथे आसमान में उनसे मुलाक़ात होने में इस तरफ़ इशारा था कि पिछले तीन हालों (मक्का मुअज़्ज़मा से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तश्रीफ़ ले जाना और मदीना मुनव्वरा में यहूदियों का आपसे दुश्मनी करना और मक्का मुअज़्ज़मा फ़त्ह होना) के बाद चौथी हालत यह पेश आएगी कि आप बादशाहों को ख़त लिखेंगे, जिसमें इस्लाम की दावत होगी। चुनांचे मक्का की जीत के बाद ऐसा ही हुआ, जिसके नतीजे में कुछ लोग मुसलमान हुए और कुछ ने सुलह कर ली।

पांचवें आसमान में हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, क्योंकि वह अपने भाई हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बहुत क़रीब हैं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उनसे बुलन्द थे, यानी छठे आसमान पर थे, क्योंकि उन्हें कलीमुल्लाह होने की फ़ज़ीलत हासिल है और आख़िरी आसमान में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई क्योंकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम नबियों में आपके आख़िरी बाप हैं और यह बात भी है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़लीलुल्लाह हैं। ख़लील का मर्तबा सबसे ऊंचा होना चाहिए। इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से भी ऊपर तशरीफ़ ले गए।[1]

नमाज़ों की कमी का जो सवाल किया तो पांच नमाज़ें रह जाने पर आगे सवाल न करने की हिक्मत

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के तवज्जोह दिलाने पर जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बार-बार नमाज़ें कम कराने के लिए दरख़्वास्त की और पांच नमाज़ें रह जाने पर जो आगे सवाल की हिम्मत न की और फ़रमाया कि अब मुझे अपने रब से शर्म आती है, उसके बारे में हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने इब्ने मुनीर से नक़ल किया है कि ऐसा मालूम होता है कि चूंकि पांच-पांच नमाज़ों की कमी हो रही थी और अब पांच ही रह गई थीं, तो अब और ज़्यादा कम करने का सवाल करने का मक़्सद यह बनता था कि गोया कोई नमाज़ भी

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 211

फ़र्ज़ न रहे, इसलिए आप आगे दरख़्वास्त करने पर शरमाए[1] और चूंकि तक्वीनी तौर पर पांच नमाज़ों का फ़र्ज़ होना तै था, इसलिए भी आगे सवाल करने की हिम्मत न हुई।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने फ़त्हुलबारी में यह भी लिखा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कमी करने का सवाल करते हैं, वह इस वजह से कि आपके ज़ेहन में यह बात थी कि सब नमाज़ें फ़र्ज़ नहीं हैं, अलबत्ता आख़िरी मर्तबा के सवाल के बाद पांच नमाज़ें रह गई थीं, उनके बारे में यह यक़ीन कर लिया कि ये तो फ़र्ज़ ही हैं, वह फ़र्ज़ होने के तौर पर था, इसलिए आपने इसके बाद सवाल नहीं किया। अल्लाह के क़ौल—

لَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَىَّ

से इस तरफ़ इशारा निकलता है।[2]

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का रोना और रश्क करना

मेराज की रिवायतों में यह भी है कि आंहज़रत सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से आगे बढ़े तो मूसा अलैहिस्सलाम रोने लगे। उनसे मालूम किया गया कि आप क्यों रोते हैं? उन्होंने कहा कि मेरे बाद एक ग़ुलाम यानी नव-उम्र शख़्स भेजा गया। उसकी उम्मत के लोग जो जन्नत में दाख़िल होंगे, मेरी उम्मत से ज़्यादा होंगे।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़त्हुल बारी में लिखते हैं

1. फ़त्हुल बारी, भाग 1, पृ० 493,
2. फ़त्हुल बारी, भाग 1, पृ० 493,

कि मआज़ल्लाह! हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का यह रोना और यह कहना कि उनकी उम्मत के लोग मेरी उम्मत के मुक़ाबले में ज़्यादा जन्नत में दाख़िल होंगे, यह हसद (जलन) के तौर पर नहीं था, बल्कि अफ़सोस के तौर पर था और अफ़सोस इस बात का था कि मेरी उम्मत में मुख़ालफ़त और नाफ़रमानी ज़्यादा थी, जिसकी वजह से उनकी उम्मत का सवाब कम हुआ और इसकी वजह से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का सवाब भी कम हुआ, क्योंकि उम्मत जितना ही अमल करती थी, इसका सवाब उसके नबी को भी मिलता था, क्योंकि वह उनको ख़ैर पर उभारने वाला था और इससे उम्मत का सवाब कम नहीं होता था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सवाब बहुत ज़्यादा है, क्योंकि आपकी उम्मत में फ़रमांबरदारी की शान बहुत ज़्यादा है। इबादत, इताअत, ज़िक्र, तिलावत, हज, तस्नीफ़, तालीफ़, जिहाद, तालीम और तब्लीग़ में यह उम्मत बहुत आगे-आगे है।

मूसा अलैहिस्सलाम ने जो यह फ़रमाया कि एक लड़का मेरे बाद भेजा गया, यह नक़्स निकालने के तौर पर नहीं था, बल्कि अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत और उसका बड़ा करम ज़ाहिर करने के लिए था, यानी सब नबियों के बाद आख़िर में आने वाले नबी को, जिसकी उम्र दूसरे नबियों के मुक़ाबले में ज़्यादा न थी, बहुत ज़्यादा बरकतों और इनामों से नवाज़ दिया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ही तो थे जिन्होंने बार-बार तवज्जोह दिलाई और उनकी फ़िक्रमन्दी से बजाए पचास नमाज़ों के पांच नमाज़ें फ़र्ज़ रह गईं। उन्होंने तो और दरख़्वास्त पेश करने की कोशिश की और फ़रमाया कि मैंने बनी इसराईल को बहुत आज़माया है, वे लोग इससे कम नमाज़ों की भी पाबन्दी नहीं कर

सके।[1] आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बस अब मैं शरमा गया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम भला क्या हसद करते और आपकी शान में किसी कमी दिखाने का क्या ख़्याल करते, उन्होंने तो मुहब्बत और शफ़क़त ज़ाहिर की।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़त्हुल बारी में फ़रमाया है[2]—

واما قوله "غلام" فليس على سبيل النقص، بدعلىٰ سبيل التنوية بقدرة الله وعظيم كرمه اذا اعطى لمن كان فى ذلك السن مالم يعطه احداً قبله ممن هو أسن منه وقد وقع من موسىٰ من العنايه بهذه الامة من امر الصلوٰة مالم يقع لغيره و تحت الاشارة لذلك فى حديث ابى هريرة عند الطبرى والبزار، قال عليه الصلاة والسلام كان موسىٰ اشدهم علىٰ حين مررت به وخيرهم لى حين رجعت اليه، وفى حديث ابى سعيد فاقبلت راجعاً، فمررت بموسىٰ ونعم الصاحب كان لكم.

हज़रत इब्राहीम ने नमाज़ कम कराने की तर्ग़ीब क्यों नहीं दी?

एक यह सवाल पैदा होता है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने नमाज़ के कम करने का सवाल करने की तरफ़ तवज्जोह क्यों नहीं दिलाई? बुज़ुर्गों ने इसके बारे में फ़रमाया है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़लील हैं। ख़लील होने के इस मक़ाम का तक़ाज़ा

---

1. हज़रत मूसा अलै० की उम्मत पर दो नमाज़ें फ़र्ज़ थीं। फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 216
2. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 216,

तस्लीम व रज़ा है। जो हुक्म हुआ, मान लिया, आगे सोचा कुछ नहीं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कलीम (बात करने वाले) हैं। बात करने का मुक़ाम नाज़ का मुक़ाम है और इंबिसात (ख़ुशी) की वजह है। जो कलीम जुर्रत कर सकता है, दूसरा नहीं कर सकता। फिर एक बात यह भी है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलामु को शिर्क व कुफ़्र वालों से ज़्यादा वास्ता पड़ा था। उन्हीं लोगों से बहस व मुनाज़रे में मुबारक उम्र ख़त्म हुई। आपकी भी पैरवी वाले और उम्मत व इजाबत के लोग ज़्यादा नहीं हुए और जो लोग आप पर ईमान लाए, वे सच्चे फ़रमांबरदार थे। नाफ़रमानों और फ़ासिक़ों के रंग-ढंग अपनी आंखों से देखे थे, जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी उम्मत को आज़माए हुए थे, इसलिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़ेहन कम कराने की तरफ़ चला गया और अपना तजुर्बा ज़ाहिर करते हुए फ़रमाया—

فانی قد بلوت بنی اسرائیل وخبرتهم

यानी 'मैं बनी इसराईल को आज़मा चुका हूं और इसी तजुर्बे की बुनियाद पर कहता हूं कि इतनी नमाज़ें पढ़ना आपकी उम्मत के लिए मुश्किल होगा।[1]

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी उम्मते मुहम्मदिया की ख़ैरख़्वाही से ग़ाफ़िल न थे, मगर उन्होंने भलाइयों की ज़्यादती को नज़र के सामने रखा जिसकी वजह से पचास नमाज़ों के फ़र्ज़ होने की ख़बर सुनकर दिल बाग़-बाग़ हो गया और ख़ुशी की इंतिहा न थी। जब यह ख़बर मिली कि काबा शरीफ़ बनाते वक़्त मैंने

1. फ़त्हुल बारी,

'रब्बना वबअस फ़ीहिम रसूलम मिन्हुम' के ज़रिए जिस उम्मत के लिए दुआ की थी, वह आज नवाज़ी जा रही है और उसे रात दिन में पचास बार अल्लाह के दरबार में हाज़िरी का शरफ़ दिया जा रहा है, फिर भला वह नमाज़ के कम करने का मश्विरा क्यों देते, क्योंकि वह भलाइयों की ज़्यादती की ओर मुतवज्जह थे, इसलिए उन्होंने उम्मते मुहम्मदिया को एक पैग़ाम भेजा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जिस रात मुझे सैर कराई गई, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मुहम्मद! मेरी तरफ़ से अपनी उम्मत को सलाम कह देना और उन्हें बता देना कि बेशक जन्नत की अच्छी मिट्टी है, मीठा पानी है और वह चटयल मैदान है और उसके पौधे ये हैं[1]—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ط

यह जो फ़रमाया कि जन्नत चटयल मैदान है, उसका मतलब यह है कि अगरचे उसमें सब कुछ है, लेकिन उसी के लिए तो है जो दुनिया में ऐसे काम करके जाएगा जिसके ज़रिए जन्नत में दाख़िल हो सके। जन्नत अपनी मेहनत से मिलेगी और उसको इस तरह समझ लिया जैसे कोई बहुत अच्छी ज़मीन हो, मिट्टी भी उम्दा हो और पानी भी मीठा हो। जब कोई आदमी उसमें पेड़ लगाएगा और उसकी सिंचाई अच्छे पानी से करेगा, तो उसका फल पा लेगा, इसलिए दुनिया में नेक अमल करते रहो, अल्लाह का ज़िक्र करो—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

1. मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 202 (तिर्मिज़ी)

'सुब-हानल्लाह वलहम्दु लिल्लाह व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर'

पढ़ा करो। उनको पढ़ोगे तो यहां जन्नत में उनके बदले पेड़ पा लोगे, इसीलिए एक हदीस में फ़रमाया है कि जिसने 'सुब्हान ल्लाहिल अज़ीम व बिहम्दिही' कहा, उसके लिए जन्नत में एक पेड़ लगा दिया जाएगा।[1]

सोने की थाली में ज़मज़म से पाक दिल का धोया जाना

मेराज का वाक़िया जिन हदीसों में बयान किया गया है, उनमें यह भी है कि आपका मुबारक सीना चाक किया गया और पाक दिल को निकाल कर ज़मज़म के पानी से धोकर वापस अपनी जगह पर रख दिया गया और फिर उसी तरह ठीक कर दिया गया जैसे पहले था। आज की दुनिया में जबकि सर्जरी आम हो चुकी है, इसमें कोई इश्काल भी नहीं है और ज़मज़म के पानी से जो धोया गया, उससे ज़मज़म के पानी की फ़ज़ीलत साफ़ तौर पर मालूम हुई। रिवायतों में यह भी है कि आपके पाक दिल को सोने की थाल में धोया गया। चूंकि उस बरतन का इस्तेमाल करने वाला फ़रिश्ता था और उस वक़्त तक हुक्म उतरे भी नहीं थे और सोने की हुर्मत मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इसलिए उससे उम्मत के लिए सोने के बरतन इस्तेमाल करना जायज़ नहीं साबित किया जा सकता और ईमान व हिक्मत से भरने का यह मतलब है कि इससे आपकी ईमानी ताक़त में और

1. मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 201 (तिर्मिज़ी)

मुबारक दिल के हिक्मत से भर जाने में और ज़्यादा तरक़्क़ी हो गई और ऊपरी दुनिया में जाने की ताक़त पैदा हो गई।[1]

قال الحافظ فى الفتح قال النووى فى تفسير الحكمة اقوال كثيرة مضطربة صفالنا منها ان الحكمة العمل المشتمل علىٰ المعرفة بالله مع نفاذ البصيرة وتهذيب النفس وتحقيق الحق للعمل به والكف عن ضده، والحكيم من حاز ذالك مخلصا وقد تطلق الحكمة على القرآن وهو مشتمل على ذالك كله وعلى النبوة كذلك وقد تطلق على العلم فقط وعلىٰ المعرفة ونحو ذالك.

नमाज़ का बड़ा दर्जा

नमाज़ अल्लाह का बहुत बड़ा इनाम है। दूसरी इबादतें इसी सरज़मीन (भू-भाग) पर रहते हुए फ़र्ज़ की गईं, लेकिन नमाज़ ऊपरी दुनिया में फ़र्ज़ की गई। अल्लाह ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऊपरी दुनिया की सैर कराई और वहां पचास फिर पांच नमाज़ें अता की गईं और सवाब पचास का ही रखा गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के तवज्जोह दिलाने पर बार-बार अल्लाह के दरबार में हाज़िर होकर नमाज़ों में कमी कराने के लिए दरख़्वास्त करते रहे और दरख़्वास्त क़ुबूल होती रही, ऊपरी दुनिया में बार-बार आपकी हाज़िरी होती रही।

वहां आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुनाजात हुई, फिर इस दुनिया में आपके साथ आपके सहाबा की और सहाबा के बाद पूरी उम्मत की मुनाजात होती रही और क़ियामत तक यह मुनाजात होती रहेगी, इनशाअल्लाहु तआला। चूंकि यह अल्लाह के

1. फ़त्हुल बारी, भाग 1, पृ० 461

दरबार की हाज़िरी है, इसलिए इसके वे आदाब हैं जो दूसरी इबादत के लिए लाज़िम नहीं किए गए—बा-वुज़ू होना, कपड़ों का पाक होना, नमाज़ की जगह का पाक होना, क़िबला रुख़ होना, अदब के साथ हाथ बांधकर खड़ा होना, अल्लाह के कलाम को पढ़ना, रुकूअ करना, सज्दे करना—ये वे चीज़ें हैं जो कुल मिलाकर किसी दूसरी इबादत की शर्त नहीं बनी हैं (गो इनमें से कुछ हुक्म कुछ दूसरी इबादतों से ही मुताल्लिक़ हैं। फिर नमाज़ी दो रक्अत के बाद तशह्हुद पढ़ता है जो 'अत्तहीयातु लिल्लाहि' से शुरू होता हैं हदीस की कुछ शरह लिखने वालों ने फ़रमाया है कि तशह्हुद में उन्हीं लफ़्ज़ों को दोहराया गया है जो मेराज की रात में अदा किए गए थे। हाज़िरी के वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तहीया (मुबारकबाद) पेश करते हुए अर्ज़ किया 'अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु', उसके जवाब में अल्लाह की तरफ़ से जवाब मिला 'अस्सलामु अलै-क अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू' यह सुनकर आपने अर्ज़ किया 'अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन'। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने फ़ौरन तौहीद व रिसालत की गवाही दी और 'अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू० के कलिमे अदा किए।[1]

---

1. ذکره مولانا فخر الحسن الكنكوهى فى تعليقهٖ على سنن ابى داؤد (باب التهشد) وفيه ايضا وبه يظهر وجه الخطاب و انه علىٰ حكاية معراجهٖ عليه السلام فى آخر الصلوٰه التى هى معراج المؤمنين، وقال شيخ مشائخنا فى بذل المجهود ص: ۱۱۷، ج: ۲، مجيبا عما يرد من الاشكال على لفظة عليك (من مشروعية الخطاب للامة فى صلوٰتهم) ناقلا عن الطيبى: نحن نتبع لفظ الرسول بعينهٖ الذى علمه الصحابة ويحتمل ان يقال علىٰ طريق

नमाज़ चूंकि बड़े दरबार की हाज़िरी है, इसलिए पूरी तवज्जोह के साथ नमाज़ पढ़ने की तालीम दी गई। सुतरा सामने रखने की हिदायत फ़रमाई ताकि दिलजमई रहे, इधर-उधर देखने से मना किया है। नमाज़ पढ़ते हुए तशबीक यानी उंगलियों में उंगलियां डालने से मना फ़रमाया है। खाने का तक़ाज़ा होते हुए और पेशाब-पाख़ाने का तक़ाज़ा होते हुए नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया है, क्योंकि ये चीज़ें तवज्जोह हटाने वाली हैं, इनकी वजह से ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ बाक़ी नहीं रहता जो दरबार की हाज़िरी के ख़िलाफ़ है।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से अल्लाह के रसूल

اهل العرفان ان المصلين لما استفتحوا باب الملكوت بالتحيات اذن لهم بالدخول فی حريم الحی الذی لايموت فقرت اعينهم بالمناجات فنبهوا علی ان ذلك بواسطة نبی الرحمة وبركته متابعته فالتفتوا فاذا الحبيب فی حرم الحبيب حاضر فاقبلوا عليه قائلين السلام عليك ايها النبی ورحمة الله وبركاته، انتهیٰ وقال الحافظ فی الفتح: والحكمة فی فرض الصلاة ليلة المعراج انه لما قدس ظاهرا وباطنا حين غسل بماء زم زم بالايمان والحكمة ومن شان الصلاة ان يتقدمها الطهور ناسب ذلك ان تفرض الصلاة فی تلك الحالة وليظهر شرفة فی الملاء الاعلیٰ ويصلی بمن سكنه من الانبياء وبالملائكة ولينا جی ربه ومن ثم كان المصلی يناجی ربه جل وعلیٰ۔

وفيه ايضا والحكمة فی تخصيص فرض الصلاة بليلة الاسراء انه ﷺ لما عرج به رای فی تلك الّيلة تعبد الملائكة وان منهم القائم فلايقعد والراكع فلايسجد والساجد فلايقعد، فجمع الله تعالیٰ له ولأمته تلك العبادات كلها فی كل ركعة يصليها العبد بشرائطها من الطمانينة والاخلاص اشار الٰی ذلك ابن ابی جمرة وقال وفی اختصاص فرضيتها الاسراء اشارة الٰی عظيم بيانها ولذلك اختص فرضها بكونه بغير واسطة بل بمراجعات تعددت علٰی ماسبق بيانه۔

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब बन्दा नमाज़ में हो तो बराबर अल्लाह की तवज्जोह उसकी तरफ़ रहती है जब तक कि बन्दा ख़ुद अपनी तवज्जोह न हटा ले। जब बन्दा तवज्जोह हटा लेता है तो अल्लाह तआला की तवज्जोह भी नहीं रहती। हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुममें से कोई आदमी नमाज़ के लिए खड़ा हो तो कंकड़ियों को न छूए, क्योंकि उसकी तरफ़ रहमत मुतवज्जह होती है।[1]

1. मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 91

आख़िरी बात

हदीस की रिवायतों से मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बेदारी में रूह और जिस्म के साथ मेराज कराई। अह्ले सुन्नत वल जमाअत का यही मज़हब है। एक ही रात में आप मक्का मुअज़्ज़मा से रवाना होकर बैतुल मक़्दिस में पहुंचे, वहां नबियों की इमामत की, फिर वहां से आसमानों पर तशरीफ़ ले गए, वहां नबियों अलैहिमुस्सलाम से मुलाक़ातें हुईं, सिदरतुल मुन्तहा को देखा, बैतुल मामूर को देखा। ऐसी जगह पर पहुंचे जहां क़लमों के लिखने की आवाज़ें आ रही थीं। ऊपरी दुनिया में पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं, फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बार-बार तवज्जोह दिलाने पर कायनात के पैदा करने वाले के दरबार में बार-बार दरख़्वास्त पेश करने पर पांच नमाज़ों का फ़र्ज़ होना रह गया और अल्लाह ने पांच नमाज़ें पढ़ने पर ही पचास नमाज़ों के सवाब का एलान फ़रमा दिया। फिर उसी रात में आसमानों से नुज़ुल फ़रमाया और वापस मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले आए। रास्ते में क़ुरैश का एक क़ाफ़िला मिला। जब सुबह को क़ुरैश के सामने रात का वाक़िया बयान किया, तो वे झुठलाने लगे, लेकिन जब आपने बैतुल मक़्दिस के बारे में उनके सवालों के शाफ़ी जवाब दे दिए और जिस क़ाफ़िले से मुलाक़ात हुई थी, वह भी पहुंच गया और आपने उसके बारे में जो कुछ बताया था, वह सबके सामने सही साबित हो गया तो क़ुरैश का मुंह बन्द हो गया और आगे कुछ न कह सके।

लेकिन अब आज के दौर के मुल्हिद (ख़ुदा को न मानने वाले) मेराज के वाक़िए को मानने में झिझकते हैं और कुछ जाहिल बिल्कुल

ही झुठला देते हैं और कुछ लोग यों कह देते हैं कि ख़्वाब का वाक़िया है। ये लोग यह नहीं सोचते अगर यह ख़्वाब का वाक़िया होता तो मुश्रिक उसका इंकार क्यों करते और यों क्यों कहते कि बैतुलमक़्दिस तक एक महीने की दूरी कैसे तै कर ली और फिर उन्हें बैतुलमक़्दिस की निशानियां मालूम करने की क्या ज़रूरत थी। सूरः इसरा के शुरू में 'सुब्हानल्लज़ी असरा बिअब्दिही' फ़रमाया, इसमें लफ़्ज़ 'बिअब्दिही' से साफ़ ज़ाहिर है कि आप रूह और जिस्म दोनों के साथ तशरीफ़ ले गए, साथ ही लफ़्ज़ इसरा जो सरा-यसरी के माज़ी के सेग़े (भूतकाल) से है, यह भी रात के सफ़र करने पर दलील बनता है। ख़्वाब में कोई कहीं चला जाए उसको सरा और इसरा के नाम से याद नहीं किया जा सकता, लेकिन जिन्हें मानना नहीं है वे क़ुरआनी आयतों और सही हदीसों का इंकार करने में ज़रा भी नहीं झिझकते।

मुन्किरों की जाहिलाना बातों में से एक बात यह है कि ज़मीन से ऊपर जाने में इतनी दूरी के बाद हवा मौजूद नहीं है और फ़्लां-फ़्लां कुरे से गुज़रना लाज़िम है और इंसान बग़ैर हवा के ज़िंदा नहीं रह सकता। ये सब जाहिलाना बातें हैं। एक तो इन बातों का यक़ीन क्या है, जिसका ये लोग दावा करते हैं और अगर उनकी कोई बात सही भी हो तो अल्लाह को पूरी-पूरी क़ुदरत है कि वह अपने जिस बन्दे को जिस कुरे से चाहे, सलामती के साथ गुज़ार दे और बग़ैर हवा के भी ज़िंदा रखे और सांस लेने को भी तो उसी ने ज़िंदगी का ज़रिया बनाया है। अगर वह इंसान को पैदाइश की शुरूआत ही से बग़ैर हवा और बग़ैर सांस के ज़िंदा रखता, तो उसे इस पर भी क़ुदरत हासिल थी और क्या सक्ते का मरीज़ बग़ैर सांस के ज़िंदा नहीं रहता? क्या सांस रोकने की मश्क़ करने वाले सांस लिए बग़ैर घंटों नहीं जीते? कुछ जाहिल तो आसमान के वजूद ही के इंकारी हैं, उनके इंकार की बुनियाद सिर्फ़ इल्म का न होना है। 'इन

हुम इल्ला यख़्सरून०' किसी चीज़ का न जानना इस बात की दलील नहीं है कि उसका वजूद ही न हो, सिर्फ़ अटकलों से अल्लाह की किताब झुठलाते हैं—

قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ط قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ط

पुराने फ़लसफ़े हों या नए, उनसे ताल्लुक़ रखने वालों की बातों का कोई एतबार नहीं। अल्लाह तआला ने अपनी किताब में सात आसमानों के पैदा करने का ज़िक्र फ़रमाया, लेकिन पुराने फ़लसफ़े वाले कहते थे कि नौ आसमान हैं और अब नया फ़लसफ़ा आया, तो वे एक आसमान का वजूद भी नहीं मानते। अब बताओ इन लगाने वालों की बात ठीक है या कायनात के पैदा करने वाले का फ़रमान सही है। सूरः मुल्क में फ़रमाया—

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ط

'क्या वह नहीं जानता, जिसने पैदा फ़रमाया और वह लतीफ़ व ख़वीर है।'

पुराने फ़लसफ़ा वाले आसमान का वजूद तो मानते थे, लेकिन साथ ही कहते कि आसमानों में ख़िर्क़ वल क़ियाम नहीं हो सकता, यानी आसमान फट नहीं सकता। यह भी उनकी अटकल पच्चू वाली बात है, कभी न गए, न जाकर देखा। ज़मीन पर बैठे-बैठे सब कुछ ख़ुद ही तै कर लिया। जिस पाक ज़ात ने आसमान व ज़मीन पैदा फ़रमाए, उसने तो आसमानों के दरवाज़े भी बताए। सूरः आराफ़ में फ़रमाया—

لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ

'ला तुफ़त्तहु लहुम अबवाबुस्समाइ' और सूरः नबा में फ़रमाया—

وَفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا

वफ़ुतिहतिस्समाउ फ़-कामत अबवाबा' और आसमान के फटने का भी ज़िक्र फ़रमाया जो क़ियामत के दिन ज़ाहिर होगा—

إِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ और إِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ

और

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ط

में तज़्किरा फ़रमाया है, इसलिए इन लोगों की बात बिल्कुल झूठ है जिन्होंने यों कहा कि आसमान के ख़िर्क़ व क़ियाम नहीं हो सकता।

कुछ लोगों को यह इश्काल था और कुछ मुल्हिदों को मुम्किन है, अब भी इश्काल हो कि एक रात में इतना बड़ा सफ़र कैसे हो सकता है? कभी पहले ज़माने में कोई आदमी इस तरह की बात करता तो उसकी कुछ वजह भी थी कि तेज़ रफ़्तार सवारियां मौजूद न थीं और अब जो नए आले ईजाद हो गए, उनका वजूद न था। अब तो जद्दा से हवाई जहाज़ घंटा-डेढ़ घंटे में दमिश्क़ पहुंच जाता है। अगर इसी हिसाब को देखा जाए तो बैतुलमक़्दिस आने-जाने में सिर्फ़ दो-तीन घंटे ख़र्च हो सकते हैं और रात को बाक़ी घंटे आसमानों पर पहुंचने और वहां देखने और वहां से वापस आने के लिए मान लिए जाएं, इसमें कोई बात नामुम्किन नहीं है। अब तो एक रात में लम्बी दूरी तै करने का इश्काल ख़त्म हो गया और यह भी मालूम है कि अल्लाह की क़ुदरत ख़त्म नहीं हुई। अल्लाह चाहे तो तेज़ रफ़्तार सवारियां हैं, उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा तेज़ रफ़्तारी अता फ़रमावे और नई सवारियां पैदा फ़रमा दे जो मौजूद सवारियों से तेज़तर हों। सूरः नह्ल में जो सवारियों का तज़्किरा फ़रमाने के बाद फ़रमाया है 'व यख़्लुक़ु मा ला तालमून०' फ़रमाया है। इसमें मौजूदा सवारियों और उन सब

सवारियों की तरफ़ इशारा है जो क़ियामत तक वजूद में आएंगी। अब तो ऐसे जहाज़ तैयार हो चुके हैं जो आवाज़ की रफ़्तार से भी ज़्यादा जल्दी पहुंचने वाले हैं और अभी और ज़्यादा तेज़ रफ़्तार सवारियां बनाने की कोशिशें जारी हैं। यही लोग जो मेराज के सफ़र के इंकारी हैं या उनके वाक़े होने में तरद्दुद दिखाते हैं, ख़ुद ही बताएं कि रात-दिन के आगे-पीछे आने में (उनके ख़्याल में) ज़मीन पर जो अपने महवर पर घूमती है, चौबीस घंटे में कितनी दूरी तै कर लेती है? और यह भी बताएं कि सूरज जो ज़मीन के कुरे से करोड़ों मील दूर है, किरन ज़ाहिर होते ही कितने सिकेंड में उसकी रोशनी ज़मीन पर पहुचं जाती है और यह भी बताएं कि जब चांद पर गए थे तो कितनी दूरी कितने वक़्त में तै की थी। यह सब कुछ नज़रों के सामने है, फिर मेराज में वाक़िए में तरद्दुद क्यों है?

मेराज वाले सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस बुर्राक़ पर तशरीफ़ ले गए थे, उसके बारे में यों फ़रमाया है कि जहां नज़र जाती थी, उतने फ़ासलों पर अपना अगला क़दम रखता था, लेकिन यह बात साफ़ नहीं है कि उसकी नज़र कहां तक पहुंचती थी। अगर सौ मील पर नज़र पड़ती हो तो मक्का मुअज़्ज़मा से बैतुलमक़्दिस तक सिर्फ़ सात-आठ मिनट की दूरी बनती है, इस तरह बैतुलमक़्दिस तक आने-जाने में कुल पन्द्रह ही मिनट ख़र्च होने का हिसाब बनता है और बाक़ी पूरी रात ऊपरी दुनिया की सैर के लिए बच गई।

आजकल जद्दा से दमिश्क़ तक हवाई जहाज़ से एक-डेढ़ घंटे का रास्ता है। अगर उसी के मुताबिक़ ग़ौर किया जाए तो दो-तीन घंटे बैतुलमक़्दिस आने-जाने के लिए और बाक़ी पूरी रात ऊपरी दुनिया की सैर के लिए मान लेने में कोई चीज़ रुकावट नहीं है।

وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ

मोमिन का तरीक़ा यह है कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्ल० की बात सुने और तस्दीक़ करे।

وَالْمُرْتَابُوْنَ هُمُ الْهَالِكُوْنَ

अब हम आख़िर में क़सीदा बरदा के अशआर (पद) का, जो इसरा और मेराज से मुताल्लिक़ हैं ज़िक्र करके इस किताब को ख़त्म करते हैं।

क़सीदा बरदा

سَرَيْتَ مِنْ حَرَمٍ لَيْلًا اِلٰى حَرَمٍ
كَمَا سَرَى الْبَدْرُ فِي دَاجٍ مِّنَ الظُّلَمِ
وَبِتَّ تَرْقٰى اِلٰى اَنْ نِّلْتَ مَنْزِلَةً
مِنْ قَابَ قَوْسَيْنِ لَمْ تُدْرَكْ وَلَمْ تُرَمِ
وَقَدَّمَتْكَ جَمِيْعُ الْاَنْبِيَآءِ بِهَا
وَالرُّسُلِ تَقْدِيْمَ مَخْدُوْمٍ عَلٰى خَدَمِ
وَاَنْتَ تَخْرِقُ السَّبْعَ الطِّبَاقَ بِهِمْ
فِيْ مَوْكَبٍ كُنْتَ فِيْهِ صَاحِبَ الْعَلَمِ
حَتّٰى اِذَا لَمْ تَدَعْ شَاْوًا لِّمُسْتَبِقٍ
مِنَ الدُّنُوِّ وَلَا مَرْقًا لِّمُسْتَنِمِ
خَفَضْتَ كُلَّ مَقَامٍ بِالْاِضَافَةِ اِذْ
نُوْدِيْتَ بِالرَّفْعِ مِثْلَ الْمُفْرَدِ الْعَلَمِ

كَيْمَا تَفُوزُ بِوَصْلٍ اَىِّ مُسْتَتِرٍ
عَنِ الْعُيُوْنِ وَسِرٍّ اَىِّ مُكْتَتَمٍ
فَخَرْتَ كُلَّ فِخَارٍ غَيْرَ مُشْتَرِكٍ
وَجُزْتَ كُلَّ مَقَامٍ غَيْرَ مُزْدَحِمٍ
وَجَلَّ مِقْدَارُ مَاوُلِّيْتَ مِنْ رُتَبٍ
وَعَزَّادِرَاكُ مَآاُوْلِيْتَ مِنْ نِّعَمٍ
بُشْرٰى لَنَا مَعْشَرَ الْاِسْلَامِ اِنَّ لَنَا
مِنَ الْعِنَايَةِ رُكْنًا غَيْرَ مُنْهَدِمٍ
لَمَّا دَعَى اللّٰهُ دَاعِيْنَا لِطَاعَتِهٖ
بِاَكْرَمِ الرُّسُلِ كُنَّا اَكْرَمَ الْاُمَمِ

आपने सैर फ़रमाई एक रात में हरमे मक्का से बैतुल मक़्दिस के हरम तक,
जैसे चौदहवीं रात का चांद अंधेरी रात में जलता है।
और आप तरक़्क़ी करते गए, यहां तक कि पहुंचे क़ा-ब क़ौसेन के रुत्बे को,
जो न इदराक किया जाता है और न तलब किया जाता है।
और उस रुत्बे की वजह से तमाम नबियों ने आपको ख़ैर मक़्दम (स्वागत) कहा,
जैसे ख़ादिम (नौकर) अपने मख़्दूम (स्वामी) को ख़ैर मक़्दम करते हैं।
और आप शगाफ़ (दराड़) करते चले गए सातों तबक़ आसमान के,
जैसे कि एक लश्कर कि उसके निशान वाले (झंडा बरदार) आप हैं,
यहां तक कि बाक़ी न रखा पेश जाना किसी आगे जाने वाले के लिए

नज़दीकी में और न बाला जाने वाले के लिए बाला जाना।

हर मकान को आपने पस्त किया, जैसे कि इज़ाफ़त से ज़ेर होता है, इसलिए कि

आप बुलाए गए बुलन्दी पर जैसे मुनादी मुफ़रदे इल्म रफ़ा से बढ़ा जाता है,

यहां तक कि आप बहरावर हुए ऐसे विसाल से जो कमाल पोशीदा है आंखों से और ऐसे राज़ से जो निहायत पोशीदा (छिपा हुआ) है

पस हासिल हुए ऐसे रुत्बे जो फ़ख्र की वजहें हैं और उसमें कोई शरीक नहीं और गुज़रे आप हर मक़ाम में कि वहां कोई और न था

और बहुत हैं बुज़ुर्गी में वे रुत्बे जो आपको दिए गए।

और किसी के इदराक में न आईं वे नेमतें जो आपको अता हुईं।

ऐ इस्लामी गिरोह! बहुत बशारत है कि हमारे वास्ते

ऐसा रुक्न इनायत हुआ है जो कभी गिरने वाला नहीं,

जब अल्लाह ने हमारे दाई को अक्रमुर्रुसुल के ज़रिए

बुलाया तो हम अक्रमुलउमम हो गए

मेराज का वाक़िआ हुज़ूर सरवरे कौनैन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की ज़िन्दगी का इस क़दर अजीब और ऐसा अज़ीमुश्शान वाक़िआ है कि अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम की तारीख़ में इसकी मिसाल नहीं मिलती, तमाम नबियों के मौजिज़ात इसी रूए ज़मीन पर नमूदार हुए हैं, लेकिन ये एक तन्हा मौजिज़ा है जो ज़मीन व आसमान की सरहदें पार कर गया था।

मेराज-ए-नबवी के वाक़िऐ पर किताबें बहुत सी हैं लेकिन उनमें बहुत सी बातें बिना सुबूत के भी आ गई हैं, इस किताब की ये ख़ास बात है कि इसमें जो भी कुछ लिखा गया है सब क़ुरआन मजीद से, हदीस शरीफ़ से, सीरते नबवी और तारीख़े इस्लाम की सही किताबों से लिया गया है।